

---

## Five Chapters from Maharamayana

श्रीमन्महाराजमायणे पञ्चसर्गाः

### Document Information

---

Text title : Five Chapters from Maharamayana

File name : mahArAmAyaNapanchasargAH.itx

Category : raama

Location : doc\_raama

Proofread by : Mrityunjay Rajkumar Pandey

Latest update : June 9, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 9, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Five Chapters from Maharamayana

---

### श्रीमन्मडारामायणे पञ्चसर्गाः

---



(गिरिजामधेश्वर संवाह ।)

मडारामायणे सर्गाः ।

श्रीसीतारामाङ्घ्रि लक्षणानुवर्णनम् ॥ ४८

रामोपासक संस्कार कथनम् ॥ ४९

क्षराक्षरनिरक्षरातीतभेदो द्वैताद्वैत निर्णयः ॥ ५०

सीताशक्त्याः ॥ ५१

श्रीरामनाम्नोमहत्त्व कथनम् ॥ ५२

४८

रामध्यानमिदं श्रुत्वा परमानन्दसम्भवम् ।

येषु भक्तारता नित्यं वद रामाङ्घ्रि चिह्नकान् ॥ १ ॥

मातापार्वती ने डैलाशनाथ श्रीशिव जे से कडा - डे नाथ! परम आनन्द को देने वाले श्रीरामज्जे के ध्यान को सुनकर मैं अतिशय तृप्त डो गड डूं अब आप श्री राम ज्जे के उन कमलचरणों के चिन्डों के स्वरूप को अताडये जिनके ध्यान में श्रीरामज्जे के अनन्य निष्काम भक्त सदा रत डैं ।

श्रूयतां मे वयो मुग्धे रामचन्द्राङ्घ्रि चिह्नकान् ।

स्मृत्वायान् मुनयः सर्वे यान्ति लोकं परात्परम् ॥ २ ॥

भगवान शिव अपनी प्राणप्रियतमा माता गौरी से बोले - डे मुग्धे ! मेरे वयनों को सावधान डोकर सुनो - मैं तुमसे श्रीरामचन्द्रज्जे के उन चरण चिन्डों को कडता डूअैं, जिन चरण चिन्डों का स्मरण करके मुनिवृन्द त्रिपादविभूति से भी परे परात्पर साकेत धाम को प्रस्थान करते डैं ।

रेभोर्ध्वा वर्तते मध्ये दक्षिणे चाङ्घ्रि पङ्कजे ।

पादादौ स्वस्तिकं ज्ञेयमष्टकोणं तथैव च ॥ ३ ॥

श्रीरघुनाथज्जे के दक्षिण चरणकमल के मध्य भाग में डार्ध रेभा विराजमान डै (अर्थात चरण के तलवों के मध्य में अेड्ी से लेकर अग्र भाग तक दएड का आकार सुशोभित डै) और डार्ध रेभा के बाड ओर चरण के आदि में स्वास्तिक का चिन्ड डै। डसी प्रकार स्वस्तिक के बाह अष्टकोण रेभा डै ।

श्रीयं डलं य मुसलं य सर्पं बाणाम्बरं तथा ।

पद्ममष्टदलं यैव स्थन्दनं वज्रमुच्यते ॥ ४ ॥

इसके बाद और्ध्व रेखा के बाईं ओर डी श्री, डल, मूसल, सर्प, बाण, अम्बर (वस्त्र), अष्टदलपद्म, स्थन्दन (रथ), वज्र आदि चिन्ड कडे जते हैं ।

यवोऽगुष्ठे तथाप्येते रेभोर्ध्वावामतः स्थिताः ।

रेभोर्ध्वादक्षिणेभागे स्वस्तिकाधोद्युपादपः ॥ ५ ॥

इसी प्रकार दक्षिण पद के अङ्गुष्ठ (अङ्गुठे)में यव चिन्ड सुशोभित है । स्वास्तिक से लेकर यवपर्यन्त जो चिन्ड हैं ये सब और्ध्व रेखा के बाईं ओर स्थित हैं और और्ध्व रेखा के दक्षिण भाग में स्वास्तिक के समकक्ष कल्पवृक्ष सुशोभित है ।

अङ्गुशं य ध्वजं यैव मुकुटं यङ्कमेव य ।

सिंहासनं यमदण्डं यामरं छत्रमुद्यतम् ॥ ६ ॥

नृचिह्नं जयमाल्यञ्च यतुर्विंशति लक्षणाः ।

ङ्कमेणैव प्रवर्तन्ते श्रीरामस्याङ्घ्रिदक्षिणे ॥ ७ ॥

अङ्गुश, ध्वजा और मुकुट तथा यङ्क, सिंहासन, यमदण्ड, यामर, छत्र, नरचिन्ड और जयमाला इतने चिन्ड मध्यवर्ती और्ध्व रेखा से दाईं ओर जानना चाडिअे । यड चौबीस रेखाओं श्रीरघुनाथञ्च के दक्षिण पद में ङ्क से सुशोभित हैं ।

और्ध्वरेखा यथा सव्ये मध्ये य सरयूस्तथा ।

गोपादं पादमूले य तदधः सागराम्बरा ॥ ८ ॥

बाअँ यरण के मध्य में दक्षिण पद में स्थित और्ध्व रेखा के समान डी अेक सरयू रेखा है और यरण के मूल में (अर्थात् अेऽी के मध्य में)गोपाद है और इस गोपाद के अधोभाग में सरयू रेखा डी बाईं ओर सागराम्बरा भूमि स्थित है ।

कुम्भमेव पताकाञ्च जम्बूङ्गलमथोच्यते ।

अर्धयन्द्रोदरश्चैव षडस्त्रं य त्रिकोणकम् ॥ ९ ॥

गदा तथा य ज्वात्मा विन्दुरङ्गुष्ठ मध्यगः ।

सरय्वादक्षिणे कोणे लक्षणां ज्ञेयमुत्तमम् ॥ १० ॥

पुनः सरयू रेखा के बाईं ओर डी कुम्भ रेखा अर्थात् घट चिन्ड है इसके पश्चात् पताका चिन्ड है द्विर जम्बूङ्गल और अर्धयन्द्र तथा शङ्ख और षटकोण है । इसके साथ डी त्रिकोण, गदा और ज्वात्मा के सङ्घित अङ्गुष्ठ के मध्य में विन्दु रेखा है । आगे सरयू रेखा के दक्षिण भाग में स्थित उत्तम चिन्डों को जानना चाडिअे ।

गोपादाधस्तथा शक्तिः सुधाङ्गुष्ठमथोच्यते ।

त्रिवलीकामपत्रञ्च पूर्णसिन्धुसुतस्तथा ॥ ११ ॥

वीणा वंशी धनुस्तूणौ मरालश्चन्द्रिकेति च ।

यतुर्विशति रामस्य यरणे वामके स्थिताः ॥ १२ ॥

गोपाद से अधः प्रदेश में शक्ति चिन्ह है। इसके बाद अमृत कुण्ड है। इसके बाद त्रिवली, कामपत्र और पूर्णचन्द्र का चिन्ह है। इसके बाद वीणा (सितार), वंशी (बाँसुरी), धनुष, तूणौर (जिसमें बाँसों को रखा जाता है), मराल (हंस) और चन्द्रिका चिन्ह को जानना चाहिए। यह चौबीस रेखाओं श्रीरघुनाथजी के बाँसू यरण में अवस्थित हैं ।

यानि चिह्नानि रामस्य यरणे दक्षिणे प्रिये ।

तानिसर्वाणि जानक्याः पादे तिष्ठन्ति वामके ॥ १३ ॥

भगवान शिव कहेते हैं - हे प्रिये! जितने चिन्ह श्रीरामजी के दक्षिण यरण में स्थित हैं वे ही समस्त चिन्ह श्रीजानकी जी के वाम यरण में अवस्थित हैं ।

यानि चिह्नानि जानक्या दक्षिणे यरणे शिवे ।

तानिसर्वाणि रामस्यपादे तिष्ठन्ति वामके ॥ १४ ॥

और हे शिवे ! जितने भी चिन्ह श्रीजानकी जी के दक्षिण यरण में स्थित हैं वही सब चिन्ह श्रीराम जी के वाम यरण में अवस्थित हैं ।

श्रीरामपदचिह्नानि कुभृतामिन्द्र कन्यके ।

शृणु तेषां गुणान्सर्वान् वक्ष्येगुह्यतमान्द्रुम् ॥ १५ ॥

हे गिरिराजकुमारी ! श्रीरघुनाथ जी के ये जितने यरण चिन्ह हैं उनके अत्यन्त गुप्त गुण समूह को मैं तुमसे कहेता हूँ - तुम उसे श्रवण करो ।

अवतारा विभोर्भुग्धे जायन्ते विश्वदेतवे ।

तेपि रामाङ्घ्रि चिन्हेभ्यः सम्भवन्ति पुनः पुनः ॥ १६ ॥

भगवान शिव माता पार्वती से बोले - हे भुग्धे ! विश्व निमित्त अर्थात् विश्व में धर्म संस्थापन हेतु जितने अवतार होते हैं वे सब प्रति कल्प में श्रीरघुनाथजी के यरण चिन्हों से ही पुनः पुनः प्रकट होते हैं ।

मडामद्रो मडाविष्णुर्जायते स्वस्तिकादपि ।

तदंशेन समुद्भूतो विष्णुर्लोकिक मङ्गलः ॥ १७ ॥

श्रीरघुनाथ जी के दक्षिण पद कमल में स्थित स्वास्तिक चिन्ह से मडामङ्गलस्वरूप मडाविष्णु (जो कारण वैकुण्ठ में विराजते हैं) ईर्ष्या को पर-विष्णु भी कहेते हैं) अवतार लेते हैं। ईर्ष्या के अंश से सर्वलोक मङ्गल करता क्षीराब्धिशायी विष्णु अवतार लेते हैं ।

रेणोर्ध्वायां मडाशम्भुर्मुडायोगेश्वरोऽभवत् ।

तेन यादं समुत्पन्नो भक्ति योग शिरोमणिः ॥ १८ ॥

भगवान् शिव माता पार्वती से कडते हैं - डे डेवि ! श्रीरघुनाथ जू डे डार्ध रेभा से मडायोगेश्वर मडशम्भु उत्पन्न डोते हैं । पुनः उन मडशम्भु डे अंश से भक्तियोगियों में शिरोमणि मैं (शिव)उत्पन्न डोता डूअँ ।

अष्टकोणसमुद्भूतो वासुदेवः स्वयं छि यः ।

परमेष्ठीततो जातो जगत् कर्ता पितामहः ॥ १८ ॥

श्रीराम जू डे दक्षिण पद में स्थित अष्टकोण रेभा से स्वयं वासुदेवाय्य नारायण प्रकट डोते हैं । उन्डी डे अंश से जगत्कर्ता (ओकपादविभूतस्थ)परमेष्ठी पितामह ब्रह्माजु उत्पन्न डोते हैं ।

श्रीशिक्षेन मडालक्ष्मीस्तस्या लक्ष्मी समुद्भवा ।

छंद यथा जगत्सर्व स्वांशेन परिपूरितम् ॥ २० ॥

श्री चिन्ड से मडालक्ष्मीजु प्रकट डोती हैं । उन्डी डे अंश से लक्ष्मी उत्पन्न डोती हैं । वडी लक्ष्मी अपने अंश से सर्वजगत का निर्माण करती हैं ।

शक्तिशिक्षान्मडामाया तस्यांशाच्छारदाद्यः ।

तस्या अेव समुद्भूतो विश्वो मायाप्रतिष्ठितः ॥ २१ ॥

शक्ति चिन्ड से मडामाया नाम वाली आदिशक्ति उत्पन्न डोती हैं । उन्डी डे अंश से माया उत्पन्न डोती हैं जो विश्व डी प्रतिष्ठा करती हैं ।

मत्स्यशिक्षेन मीनस्य यावतारः प्रवर्तते ।

क्षितेः कूर्मसमुत्पत्तिर्वराडश्चाभ्यरादपि ॥ २२ ॥

श्रीरघुनाथ जू डे यरण स्थित मत्स्य यरण चिन्ड से मत्स्यावतार डोता है और भू यरण चिन्ड से कूर्मावतार डोता है । अभ्यर यरण चिन्ड अर्थात् वस्त्र रेभ से वाराडावतार डोता है ।

वज्रकुशाभ्यां समुत्पन्नो नृसिंहो भक्तवत्सलः ।

त्रिविक्रमस्य समुत्पत्तिस्त्रिवल्या अभिजायते ॥ २३ ॥

श्रीराम जू डे यरणों में स्थित वज्र और अडुश रेभा से भक्तवत्सल नृसिंह भगवान् का अवतार डोता है । त्रिवली रेभा से त्रिविक्रम वामन भगवान् का अवतार डोता है ।

धनुस्त्रिकोणतूणोभ्यः सञ्जातो भार्गवोऽपि य ।

शेषश्च शरसर्पाभ्यां लक्ष्मणो लक्ष्मणान्वितः ॥ २४ ॥

श्रीरघुनाथ जू डे यरणों में स्थित धनुष, त्रिकोण और तूणीर छन तीन रेभाओं से भार्गव (भृगुवंश में उत्पन्न)परशुराम जू का अवतार डोता है । शेष रेभा से अनन्तशेषनाग का और बाण डी रेभा से लक्ष्मणजु (जो रामभक्ति लक्ष्मणों से युक्त हैं)का अवतार डोता है ।

छषदंशेन सर्पस्य मुशल वाङ्गलेनय ।

भलभद्रः समुद्भूतः शेषद्विविधमर्दनः ॥ २५ ॥

श्रीरघुनाथ ञु के चरणे मे स्थित शेष रेणा के अंश से और डल तथा मूसल के पूर्णांश से द्विविध का मर्दन करने वाले शेषरूप बलभद्र अवतीर्ण हुअे ।

सिंहासनार्धं चन्द्राभ्यां बुध्दु एत्यभिधीयते ।

कल्कीश्रैव समुद्भूतस्तथा यकातछत्रयोः ॥ २६ ॥

सिंहासन तथा अर्धचन्द्र एन दोनों श्रीरामचरण चिन्हों से बुध्दु भगवान अवतार लेते हैं । छत्री प्रकार से यक चिन्ह और छत्र चिन्ह से कल्कि अवतार होता है ।

पुरुषाङ्गसुधाकुण्डं पूर्वाश्रकलानिधिः ।

यवस्रजादिशृङ्गाराः श्रीकृष्णोत्पत्तिकारकाः ॥ २७ ॥

पुरुष चिन्ह, सुधाकुण्ड, पूर्वाश्रय तथा मालादिक शृङ्गार सूचक जितने भूषण के चिन्ह हैं ये सभी श्रीकृष्णभगवान की उत्पत्ति का कारण हैं ।

देवाः सरोरुडेर्षैव व्यासो जम्भूकलेन च ।

मुकुटेन पृथुर्जातो ऽसाहृंस इतिस्मृतः ॥ २८ ॥

कमल चिन्ह से देवता समूह उत्पन्न होते हैं और जम्भूकल रेण से श्रीवेदव्यासञ्ज प्रकट होते हैं । मुकुट चिन्ह से पृथुराज तथा ऽस चिन्ह से ऽसावतार प्रकट होते हैं ।

स्थन्नाम्नवोजाता ये च स्वयम्भुवाद्यः ।

ऋषभोऽमृतकुण्डाद्धै यवाद्यज्ञावतारकः ॥ २९ ॥

स्वायम्भुव मनु से लेकर सभी यौदह मनु श्रीराम चरणस्थ स्थन्न चिन्ह से उत्पन्न होते हैं । अमृत कुण्ड चिन्ह से ऋषभ देव उत्पन्न होते हैं । यव रेणा से यज्ञ अवतार भगवान प्रकट होते हैं ।

यामरेण डयग्रीवो देवर्षिस्तुम्भुरेण च ।

लैषज्याधिपतिः सम्यक् जातो धेनुपदादपि ॥ ३० ॥

भगवान श्रीराम चरण में स्थित यामर चिन्ह से डी डयग्रीव भगवान तथा तुम्भुरु शिष्य सङ्घित भगवान नारद का अवतार होता है । इसके बाद धेनुपाद चिन्ह से भगवान धन्वन्तरि का अवतार होता है ।

नृसिंहांशेन शङ्भेन दत्तात्रयोऽभिजायते ।

ध्वजपताकयोर्जातो नरनारायणावुभौ ॥ ३१ ॥

नर चिन्ह तथा शङ्भ चिन्ह से दत्तात्रेय ञ्ज प्रकट होते हैं । ध्वज और पताका चिन्हों से नर-नारायण भगवान का अवतार होता है ।

अष्टाङ्गयोगसंयुक्तः कपिलोऽप्यष्टकोणतः ।

ञ्जवात्मनोर्ध्वरेभायाः सञ्जाता सनकाद्यः ॥ ३२ ॥

यम नियम आसन से लेकर ध्यान धारणा समाधि पर्यन्त अष्टाङ्ग योग से संयुक्त कपिलदेवञ्चु का अवतार श्रीराम  
चरण स्थित अष्टकोण से होता है। ज्व और उर्ध्व रेखा से डी सनक सनन्दन सनत् सनत्सुमार आदि मदर्षि  
उत्पन्न होते हैं ।

वंश्या वंशी समुज्जता कृष्णाधरसुधाप्रिया ।

वृन्दावनेऽद्भुतैर्नद्विः सर्वलोकविमोहिनी ॥ ३३ ॥

वृन्दावन में स्थित भगवान् कृष्ण के अधरामृत का पान करने वाली तथा अपने अद्भुत नाद द्वारा सभी लोकों को  
विमोहित करने वाली वंशी का अवतार श्रीराम ज्चु के चरणों में स्थित वंशी रेखा से होता है ।

शक्तिरह्लादिनी राधा यन्त्रिकायाः समुद्भवा ।

राससम्भूषणा श्यामा सर्वाभरणभूषिता ॥ ३४ ॥

भक्तिस आभरणों से भूषित सोलह वर्ष की अवस्था से युक्त रासमण्डल में भूषणरूपा आह्लादिनी शक्ति श्रीराधा  
ज्चु का अवतार श्रीरघुनाथ ज्चु के चरणों में स्थित यन्त्रिका से होता है ।

गद्याश्च मडाकालो यमदण्डाद्यमस्तथा ।

बिन्दोर्भानुः सरथ्वावै गङ्गाद्याः तीर्थ सम्भवाः ॥ ३५ ॥

श्रीरघुनाथ ज्चु के चरण स्थित गदा चिन्ड से मडाकाल उत्पन्न होता है और यमदण्ड चिन्ड से यमराज उत्पन्न होते  
हैं। बिन्दु चिन्ड से सूर्य भगवान् का प्राकट्य होता है और सरथू रेखा से गङ्गादिक सभी पवित्र तीर्थों का उद्भव  
होता है ।

ऐश्वर्योण य धर्मोण यशसा य श्रियैवय ।

वैराग्यमोक्षषट्कोणैः सञ्जातो भगवान्हरिः ॥ ३६ ॥

ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, वैराग्य और मोक्ष षट्कोण से युक्त भगवान् हरि श्रीराम ज्चु के चरण स्थित षट्कोण  
चिन्ड से उत्पन्न होते हैं ।

अतेयांशकलाभूताः शक्तिवीर्यबलान्विताः ।

रामचन्द्राङ्घ्रिसञ्जाता रामस्तुभगवान्स्वयम् ॥ ३७ ॥

शक्ति, वीर्य और बल से समन्वित ये सभी उक्त अवतार श्रीरामचन्द्र के अंश तथा कला आदि से उत्पन्न होते  
हैं। पर श्रीरघुनाथ ज्चु तो स्वयं पूर्ण पुरुषोत्तम परम भगवान् हैं ।

त्वत्त अते मया प्रोक्ता येय सर्वे सुलोचने ।

उपासयन्ति ते नित्यं रामचन्द्राङ्घ्रिपङ्कजम् ॥ ३८ ॥

भगवान् शिव माता पार्वती से बोले - हे सुलोचने ! अभी अभी उपर जिन जिन अवतारों की चर्चा मैंने तुमसे  
की है ये सभी नित्य रूप से श्रीरघुनाथ ज्चु के चरण कमल की उपासना करते हैं ।

अन्यच्छृणु भूयस्त्वं या मलयो विभूतयः ।

अंशांशेनैव सम्भूता रामाङ्घ्रैर्लोकपूजिताः ॥ ३९ ॥

भगवान् शिव माता पार्वती से बोले - हे प्रिये ! श्रीरामचरण चिन्डों के अंशों तथा अंशों के अंशों से प्रकट होकर समस्त लोक में पूजित उन अन्य मडती विभूतियों का भी भ्रवण करो ।

स्वस्तिकार्येव सञ्जातं कल्याणं सर्वतः प्रिये ।

मडायोगोर्ध्वरेभायां अष्टकोषाष्ट सिद्धयः ॥ ४० ॥

हे प्रिये ! जगत के समग्र कल्याण इसी स्वास्तिक चिन्ड से प्रकट होते हैं और ऊर्ध्व रेखा से ही मडायोग की उत्पत्ति होती है। इसके बाद अणिमालघिमादिक अष्ट सिद्धियां भी अष्टकोष चिन्ड से उत्पन्न होती हैं ।

श्रियः सर्वाः श्रियोद्भूता डालाद्भलमिडोय्यते ।

मुसलान्मुसलं जातं बलदेवायुधमिप्रिये ॥ ४१ ॥

भगवान् शिव माता पार्वती से बोले - हे प्रिये ! संसार में जितनी भी श्री अर्थात् शोभा सुभ सम्पत्ति वैभव आदि है वह सब श्रीराम चरणस्थ श्री चिन्ड से उत्पन्न हुआ है। उल चिन्ड से बल अर्थात् वीर्य की उत्पत्ति होती है। और मूसल चिन्ड से वसुदेव पुत्र बलदेव ७ का प्रिय आयुध मूसल उत्पन्न होता है ।

इणिनोऽनन्त उत्पन्नो ध्यानशान्तिहलप्रदः ।

रामभाषाः शरात्सर्वे जाताः शत्रुक्षयङ्कुराः ॥ ४२ ॥

ध्यान करने पर जो शान्ति रूप हल को प्रदान करने वाले हैं जैसे इणिराज अनन्तशेष भगवान् श्रीरामचरण स्थित शेष रेखा से उत्पन्न होते हैं और शत्रु का विनाश करने वाले परमप्रलयङ्कुरी प्रयाङ् रामभाषा श्रीराम ७ के चरण स्थित शर रेखा से उत्पन्न होते हैं ।

अम्भरादम्भरो जातो निर्लेपो ध्यानतोऽभवत् ।

पङ्कजात्पङ्कजं जातं विष्णुहस्तमुदान्वितम् ॥ ४३ ॥

अम्भर अर्थात् वस्त्र चिन्ड से अम्भर अर्थात् वह आकाश उत्पन्न होता है जिस आकाश में धारणा करने से योगी निर्लेप सिद्धि को प्राप्त करता है। पङ्कज चिन्ड से पङ्कज अर्थात् वह पद्म प्रकट होता है जो भगवान् विष्णु के कर कमलों में सदा विराजमान होकर उत्कर्ष को प्राप्त होता है ।

नलीयते कदाचिद्द्वै तस्यध्यानी भवाण्वि ।

इतेऽपि कुत्रचिद्भासे पद्मपत्रमिवाम्भसा ॥ ४४ ॥

उसी कमल का ध्यान करके ध्यानी जन संसार समुद्र में कभी नहीं डूबते। चाहे प्रारब्ध वश उचित अनुचित स्थल कहीं भी वास करें लेकिन जैसे कमल पुष्प सदा ही कीचड में रहकर भी कीचड से सर्वथा मुक्त रहता है उसी प्रकार ये ध्यानी जन भी संसारी विषयों से निर्लेप रहते हैं ।

स्थन्नात्पुष्पकोत्पत्तिश्चतुर्वर्गं हलप्रदः ।

वज्राद्भ्रजमुत्पन्नं पापपर्वतडानिदम् ॥ ४५ ॥

धर्म अर्थ काम मोक्ष चारों हल को प्रदान करने वाला पुष्पक विमान श्रीराम ७ के चरण स्थित रथ चिन्ड से उत्पन्न होता है। पाप रूषी पर्वत को ह्राडने वाला वज्र श्रीरामचरणस्थ वज्र चिन्ड से उत्पन्न होता है ।



यवेन धनदो जातः सर्वे यज्ञाद्योपि य ।

पारिजातात्समुत्पन्नः कल्पवृक्षश्च कामदः ॥ ४६ ॥

यव रेभा से धनद अर्थात् कुबेर उत्पन्न होते हैं और सम्पूर्ण वैदिक यज्ञ भी इसी यव चिन्ह से उत्पन्न होते हैं। श्रीराम जो के यरण स्थित पारिजात चिन्ह से मनोवाञ्छित फलों को प्रदान करने वाले कल्प वृक्ष का प्राकट्य होता है ।

अङ्कुशाद्ज्ञानं सञ्जातं सर्वलोक मलापडम् ।

प्रापयत्येव सन्मार्गे मत्तमात्तङ्गजं मनः ॥ ४७ ॥

सभी लोकों के पाप का नाश करने वाला ब्रह्मज्ञान उस अङ्कुश रेभा से उत्पन्न होता है जो अपने ध्यापक जनों के मनोऽपी मतवाले छाथी को शीघ्र ही विषयऽपी कुमार्ग से उटा कर भक्तिऽपी सन्मार्ग में अग्रसर कर देता है ।

ध्वजया विजयोजातो मुकुटादिव्यभूषणः ।

यः करोति मडाराजं दीनमेवस्वतेजसः ॥ ४८ ॥

समस्त लोकों पर प्राप्त होने वाली विजय ही श्रीराम यरण स्थित ध्वजा चिन्ह से प्रकट होती है। सम्पूर्ण दिव्य आभूषण उस मुकुट चिन्ह से उत्पन्न होते हैं जो मुकुट अपने तेज से दीन को भी मडाराज बना देता है ।

यङ्कात्सुदर्शनञ्चङ्कं मडादृष्टविनाशनम् ।

सिंहासनेन सम्भूतं रामसिंहासनं परम् ॥ ४९ ॥

मडादृष्टों का विनाश करने वाला सुदर्शन यङ् श्रीराम जो के यरणों में स्थित यङ् चिन्ह से प्रकट होता है और सिंहासन चिन्ह से श्रीराम जो का परम दिव्य सिंहासन है वल उत्पन्न होता है ।

यामरेण समुद्भूता यन्द्रिकायन्द्रसूर्ययोः ।

लृटिप्रकाशिका सम्यङ् सर्वमात्सर्था नाशनी ॥ ५० ॥

सम्यङ् प्रकार से मात्सर्थाटि षडविकारों का नाश करने वाली तथा लृट्य को प्रकाशित करने वाली यन्द्र सूर्य सम्बन्धिनी जो यन्द्रिका अर्थात् प्रभा है वल श्रीराम जो के यरणों में स्थित यामर चिन्ह से प्रकट होती है ।

आतपत्रोद्भवोमेधो ध्यानीछत्रपतिर्भवेत् ।

तथा पुरुषचिह्नेन तत्सद्ब्रह्म प्रकाशकः ॥ ५१ ॥

आत पत्र अर्थात् छत्र चिन्ह से मेघ माला उत्पन्न होती है और उस छत्र चिन्ह का ध्यानी छत्रपति होता है। इसी प्रकार पुरुष चिन्ह से तत्सद्ब्रह्म प्रकाशक परमात्मा उत्पन्न होते हैं

परमात्मा परब्रह्म सर्वसाक्षीजगद्गुरुः ।

यस्यध्यानं समायुक्ता योगिनो नित्यमेवय ॥ ५२ ॥

वे परमात्मा परब्रह्म, सर्वसाक्षी तथा जगद्गुरु हैं जिनका समाहित रूप से योगिजन सदा सर्वदा ध्यान करते हैं ।

यवास्रजोऽपि शृङ्गारः रस शृङ्गारदायकः ।

गोपादात्कामधेनुश्च सर्वकामफलप्रदा ॥ ५३ ॥

यव माला और शङ्खगार सूयक जितने भी चिन्ड हैं उन सब से श्रृङ्गार रस की उत्पत्ति होती है। श्रीराम चरण में स्थित गोपाद चिन्ड से सर्वकामना रुपी कृल को प्रदान करने वाली कामधेनु प्रकट होती है।

प्रेमसिन्धोरगाधस्य सरयूत्यत्तिरुच्यते ।

क्षोणिचिह्नात्क्षमा यैव भगवद्धर्म विवर्धनी ॥ ५४ ॥

श्रीराम चरणस्थ सरयू रेखा से अगाध रामप्रेम रुपी समुद्र का प्राकट्य होता है। क्षोणी चिन्ड अर्थात् भूमि रेखा से भगवद्धर्म को बढ़ाने वाली क्षमा उत्पन्न होती है।

कुम्भादमृतकुम्भश्च निःसृतः सिन्धुमन्थने ।

कीर्तिस्तुतिः पताकायां विमलासत्प्रकाशिका ॥ ५५ ॥

समुद्र मन्थन में जो अमृत घट निकला था वह श्रीराम चरणों में स्थित कुम्भ चिन्डों से ही प्रकट होता है और विमल सत्प्रकाशिका स्तुति तथा कीर्ति का प्राकट्य श्रीराम चरणस्थ पताका चिन्ड से होता है।

जम्बूकूलेन चिह्नेन वैनतेयः समुद्भवः ।

रागादि पन्नगध्वंसी श्रीरामध्यान सूयकः ॥ ५६ ॥

रागादिक रुप सर्प को ध्वंस करने वाले तथा श्रीराम जो के ध्यान को सूचित करने वाले वैनतेय श्रीगरुडः जो मडाराज का प्राकट्य श्री राम चरण में स्थित जम्बूकूल से होता है।

अर्धचन्द्रात्कलाष्ठन्तोः पाञ्चजन्यं य शङ्भतः ।

वेदास्ततोऽभिजायन्ते श्रीरामगुणगायकाः ॥ ५७ ॥

छन्दु अर्थात् चन्द्रमा की सभी सोलह कलाओं श्रीराम जो के चरण में स्थित अर्धचन्द्र चिन्ड से उत्पन्न होती हैं। शङ्भ रेभ से ही पाञ्चजन्य शङ्भ (जो भगवान श्रीकृष्ण के हाथ में रहता है) उत्पन्न होता है। इसी शङ्भ चिन्ड से श्रीराम जो के परम दिव्य अगाणित गुणगाणों का गान करने वाले वेदसमूह प्रकट होते हैं।

षट्कोणात् षण्मुण्डोऽजातः षड्विकारविनासनः ।

त्रयः कालस्त्रिकोणाख्य त्रिकुटी नादमुत्तमम् ॥ ५८ ॥

कामादिक षडविकारों के नाशक षण्मुण्ड कार्तिकेय स्वामी ही षट्कोण चिन्ड से उत्पन्न होते हैं। इसी प्रकार उत्तम त्रिकुटी नाद तथा भूत, भविष्य और वर्तमान काल त्रिकोण रेखा से उत्पन्न होते हैं।

गद्यया य गद्योत्पत्तिर्जुवात्मा ज्ञवसम्भवः ।

भिन्दुना मन्मथोजातो विजयो सर्वदंढिनाम् ॥ ५९ ॥

गद्य की उत्पत्ति गद्य चिन्ड से और ज्ञवात्मा की उत्पत्ति ज्ञव चिन्ड से होती है। इसी प्रकार प्राणी मात्र पर विजय प्राप्त करने वाले कामदेव भिन्दु रेखा से प्रकट होते हैं।

मूलप्रकृतिरुत्पन्ना शक्त्याविश्वमोहिनी ।

अमृतश्च सुधाकुण्डाद्रामभक्तिप्रदः परः ॥ ६० ॥

समस्त विश्व को मोहित करने वाली मूल प्रकृति श्रीराम चरणस्थ शक्ति रेभ से उत्पन्न होती है और श्रीरामभक्ति रूषी अभृत को डी प्रदान करने वाली अभृतधारा श्रीराम चरण में स्थित अभृत कुण्ड चिन्ड से प्रकट होती है ।

त्रिवल्यामद्भुता शोभा त्रिवेणीरूपमद्भुतम् ।

रत्यादियभयाप्यत्यं मीनेन शकुनस्तथा ॥ ६१ ॥

संसार में वल अद्भुत शोभा जिससे अद्भुत सुभदायक त्रिवेणी उत्पन्न होती है वल श्रीराम चरणस्थ त्रिवली चिन्ड से उत्पन्न होती है। कामदेव की पत्नी रति के नेत्र की चपलता और संसार के सभी शकुन समूह श्रीराम चरणस्थ मीन चिन्ड से प्रकट होते हैं ।

पूर्वोद्भुः पूर्णचन्द्रेण तापघ्नस्तोषदायकः ।

वीणया रागरागिन्यो वाधमद्भुत गानदम् ॥ ६२ ॥

त्रिताप का शमन करने वाली और परम सन्तोष प्रदान करने वाला जो पूर्णचन्द्र है वल श्रीराम चरणस्थ पूर्णचन्द्र चिन्ड से उत्पन्न होता है। इसी प्रकार वीणा चिन्ड से तैरवादि छलों राग तथा रामकवी आदि रागिनियां और गान में अद्भुत सुभ देने वाले मृदङ्गादि वाद्य उत्पन्न होते हैं ।

महानाद रसो वंश्याः स्वरसामतथैव यः ।

धनुषिशारङ्गमुष्यानि धनुषैवोद्भवानि य ॥ ६३ ॥

सभी रसिक जनों को परमानन्दित करने वाला महानादरस तथा षड्जाति सामस्वर श्रीराम चरणों में स्थित वंशी रेभ से उत्पन्न होते हैं। भगवान के शार्ङ्गादिक जितने दिव्य धनुष हैं वे सब श्रीराम चरणस्थ धनुष चिन्ड से उत्पन्न होते हैं ।

समभूमिकाज्ञानं य तूणेनैवोपजायते ।

नीडः सर्व गुणानां य सीतारामस्य सर्वदा ॥ ६४ ॥

समभूमिका ज्ञान अर्थात् साधनसमक का ज्ञान जो श्रीवैष्णव धर्म के साधकों में होता है वल ज्ञान श्रीराम चरणों में स्थित तूण रेभ से उत्पन्न होता है। श्रीसीताराम जो के समस्त दिव्यस्वेतरसमस्तविलक्षण निम्बिलडेयप्रत्यनीक कल्याणगुणगणों का जो समूह है उसकी उत्पत्ति भी इसी तूण रेभा से होती है ।

सद्विवेकोभवद्भ्यं सान्माया ब्रह्मोभयोरपि ।

क्षीरोदकं यथाभिन्नं तथैव प्रकरोति सः ॥ ६५ ॥

माया तथा ब्रह्म में भेद का जो सद्विवेक है, जिस विवेक के होने पर उस जैसे दूध में मिले डुअे पानी को अलग कर लेता है उसी प्रकार यल सद्विवेक गुण माया और ब्रह्म के भेद को समज लेता है यही सद्विवेक गुण श्रीराम चरणस्थ उंस रेभ से उत्पन्न होता है ।

यन्द्रिकायाद्युतिर्जाता यन्द्ररत्नतडित्सुय ।

प्रकाश्यमपि सर्वेषां यथायोग्यं य जायते ॥ ६६ ॥

सूर्य को प्रकाशित करने वाली प्रभा, चन्द्र को प्रकाशित करने वाली धृति, मणिरत्न की आभा तथा बिजली का तेज ये सभी श्रीराम चरणों में स्थित चन्द्रिका चिन्ह से उत्पन्न होते हैं ।

त्वत्तमेतानि चिह्नानि मयाभ्यातानि पार्वति ।

अकैक चिह्न मध्येतु सद्गुणा कोटि कोटयः ॥ ६७ ॥

भगवान शिव माता पार्वती से बोले - हे पार्वती ! मैंने तुमसे छतने चिन्ह के व्याख्यान कर दिये हैं परन्तु अेक अेक चिन्ह के मध्य कोटि कोटि सद्गुण वर्तमान हैं ।

अेषाम्मध्ये समायाति हृद्यैकं यापि लक्षणम् ।

रामधाम गमनाय क्षणेनाकल्मषोभवेत् ॥ ६८ ॥

एन अऽःताविस चिन्हों के मध्य में अेक भी चिन्ह को यदि कोई जूव अपने हृद्य में धारण करता है तो वड तत्क्षण अकल्मष अर्थात पाप से रडित डोकर श्री राम जू के परम धाम साडेत के लिये गमन कर जाता है ।

सकलाः सद्गुणास्त्वत्तो वर्णिता भूधरापात्मजे ।

शृणुष्व चिह्नरङ्गानि कथयामि समासतः ॥ ६९ ॥

भगवान शिव आगे बोले - हे भूधरात्मजे ! श्रीराम चरण चिन्हों के सकल सद्गुणों का मैंने तुमसे वर्णन किया अब उन चिन्हों के रङ्गों को तुम सुनो ।

उर्ध्वरेष्मारुणाज्ञेया स्वस्तिकम्पीतमुच्यते ।

सितारुणं याष्टकोणं श्रीश्चबालार्कसन्निभा ॥ ७० ॥

भगवान शङ्कर बोले - हे प्रिये ! श्रीराम जू के दक्षिण पद में जो उर्ध्व रेष्मा है उसे अरुण अर्थात लाल रङ्ग का जानो । स्वास्तिक चिन्ह पीत अर्थात पीले रङ्ग का है द्विर अष्टकोण सीत अरुण है अर्थात श्वेत वर्ण और लाल वर्ण है । श्री चिन्ह की छवि बालसूर्य के समान है ।

उलञ्च मुसलञ्चैव श्वेतधूम्रमितिस्मृतम् ।

सर्पोशितस्तथाभाणः श्वेतपीतारुणोऽरित् ॥ ७१ ॥

उल चिन्ह और मूसल चिन्ह श्वेत और धूम्र रङ्ग हैं अर्थात उल उज्ज्वल तथा मूसल धूम्र वर्ण है और सर्प चिन्ह अशित अर्थात श्याम वर्ण है । भाण रेष्मा चार रङ्ग - श्वेत पीत अरुण और अरित से सुशोभित हो रही है ।

नभोवदम्भरं ज्ञेयमरुणं पङ्कजं स्मृतम् ।

रथविचित्र वर्णञ्च युक्तः वेद ह्यैः सितैः ॥ ७२ ॥

अम्भर अर्थात वस्त्र चिन्ह नभवत अर्थात आसमानी रङ्ग है । पङ्कज जो कमल चिन्ह है वड लाल रङ्ग का है और उज्ज्वल चार ढोऽःों से युक्त रथ विचित्र रङ्ग के हैं अर्थात अनेक रङ्ग मिले हैं ।

वञ्च तडित वज्रज्ञेयं श्वेतरक्तं तथा यवम् ।

कल्पवृक्षं हरिद्वर्णं अङ्कुशंश्याममुच्यते ॥ ७३ ॥



पीतरक्तसितावीणा वेषुश्चित्रविचित्रकः ।

हरित्पीतोऽरुणश्चैव त्रिविधं धनुरुच्यते ॥ ८१ ॥

वीणा अर्थात् सितार चिन्ड पीत रक्त तथा उज्ज्वल वर्ण का है। वेषु अर्थात् वंशी चिन्ड विचित्र रङ्ग का है अर्थात् उसमें अेक साथ कइ रङ्ग हैं। धनुष चिन्ड तीन रङ्ग का है - हरित (हरा), पीत (पीला)और अरुण (लाल)।

वेषुवद्धर्ततेतूणो ढंसधषत्सितारुणः ।

सित पीतारुणा ज्योत्सना सर्वन्तोरङ्गमद्भुतम् ॥ ८२ ॥

तूण रेभ वेषु रेभ के समान ही चित्र विचित्र वर्ण की है और ढंस चिन्ड स्वल्प श्रेत और लाल है। ज्योत्सना अर्थात् चन्द्रिका चिन्ड श्रेत पीत लाल होने से उसकी सर्वतोद्दिष्टि शोभा हो रही है।

रङ्गेनैकेन यः क्षिमा रामरङ्गैः सरङ्गितः ।

वर्जितास्तेऽपि सद्धर्मे रामरङ्गैर्नरङ्गिताः ॥ ८३ ॥

भगवान शिव कइते हैं कि जो पुरुष रेभ के अेक रङ्ग में भी चित्त को सराभोर करता है वइ श्रीराम ञु के रङ्ग में रङ्ग जाता है। जो अभी तक श्रीराम ञु के रङ्ग में नहीं रङ्गे हैं वइ निश्चित रूप से सकल सद्धर्म से वञ्चित हैं।

ममैव य मडर्षिणां देवर्षेशोर्ध्व रेतसाम् ।

ब्रह्मादिनां य देवानां वेदसारमथोच्यते ॥ ८४ ॥

भगवान शिव बोले - हे गिरिजे ! मेरा, सभी मडर्षियों का, देवर्षियों का और सभी ऒध्वरेता अर्थात् अभाएड ब्रह्मचारी सनकादि प्रभृतिथों का और ब्रह्मादि सलित सकल देव वृन्तों का जो सार सिद्धान्त है उस वेद सार सिद्धान्त को मैं कइता हूँ।

सर्वान्निताम्भडाविद्या सीतारामाङ्घ्रि चिह्नकान् ।

ध्यानन्त्यर्द्धनिशम्भक्त्या निधायदृष्टयेऽमलान् ॥ ८५ ॥

श्रीरामचरणं त्यक्त्वा डिण्चिदन्यत्करोति यः ।

तुषाभिधातनं मूढः प्रकरोति पुनः पुनः ॥ ८६ ॥

ये उपरोक्त मडर्षि वृन्त, मैं तथा सभी देवर्षि जन, देवगाण आदि सभी जिनका दृष्टय अमल अर्थात् मल रहित है वे अपने अमल दृष्टय में श्रीसीताराम चरणचिन्डों को स्थापित कर उन्हीं ब्रह्मविद्या रूप चरण चिन्डों का अडर्निश अर्थात् रात-दिन प्रेमभक्तिपूर्वक ध्यान करते हैं अर्थात् उपासना करते हैं। जो पुरुष श्रीराम ञु के चरण को त्यागकर लोकेषुण के लिअे और कुछ करता है वइ मूर्ख बार बार भूसा कूटने जैसा मूर्ख कार्य करता है।

अङ्घ्रिचिह्नानि सर्वाणि मयाप्रोक्तानि यानि य ।

श्रीरामस्यैव चाङ्गानि सर्वाण्येव न संशयः ॥ ८७ ॥

भगवान् शिव बोले - हे शिवे ! सभी श्रीरामचरण चिन्डों का मैंने जो तुमसे वार्णन किया वे सभी के सभी श्री राम  
जु के शाश्वत पूर्ण अङ्ग हैं ।

एतं रत्नस्य परमं श्रीरामोपासकं विना ।

न दातव्यं न दातव्यं न दातव्यं कदाचन ॥ ८८ ॥

यह उत्तम परम रत्नस्य श्रीराम भक्तों को छोड़कर अन्य किसी को नहीं देना चाँहिये, नहीं देना चाँहिये और  
नहीं देना चाँहिये क्योंकि अनाधिकारियों के मध्य भगिनी अपनी योग्यता को प्राप्त नहीं होता है ।

अप्रकाश्यमिदं सर्वं तथापि मम ज्वनम् ।

गुह्याद् गुह्यतमं ज्ञेयं गुह्यानां गुह्यमुत्तमम् ॥ ८९ ॥

इस परम दिव्य रत्नस्य को गोप्य से भी अति गोप्य और गोप्य में भी अति गोप्य जानकर प्रकाशित मत करना  
क्योंकि यह मेरा ज्वन अर्थात् प्राण ही है ।

- एति श्रीमन्मडारामायणे गिरिजामणेश्वर संवादे श्रीसीतारामाङ्घ्रि लक्ष्मणानुवर्णने अष्टयत्वारिंशत्सर्गः ॥  
४८ ॥

## ४९

मथ्येतद्ग्याङ्गुत्वा स्वामिन्कथय विस्तरात् ।

रामभक्तिः कथं जायेच्छ्रीरामोपासकश्चकः ॥ १ ॥

माता पार्वती भगवान् शिव से बोलीं - हे स्वामी ! मुझ पर कृपा करके विस्तार से मुझे यह बताइये कि श्रीराम  
भक्ति कैसे उत्पन्न होती है? श्रीराम जु का उपासक कौन है?

त्वैयेतद्गुत्तमं प्रष्टे धन्यधन्यासि पार्वति ।

श्रीरामोपासकोऽनन्योवक्ष्ये तस्यविधिं शृणु ॥ २ ॥

भगवान् शिव माता पार्वती से बोले - हे पार्वती ! तुमने मुझसे अतिश्रेष्ठ प्रश्न किया है इसलिये आप धन्यों में  
भी परम धन्या हैं। मैं आपसे अनन्य रामोपासकों की उपासना विधि कड़ता हूँ, आप सावधान होकर श्रवण  
करें ।

मुग्धे शृणुष्व मनुजोऽपि सडस्त्रमध्ये धर्मप्रती भवति सर्वसमानशीलः तेष्वेवकोटिषु भवेद्विषयेविरक्तः ।

सद्ज्ञानकोभवति कोटिविरक्तमध्ये विज्ञानरूपविमलोप्यथब्रह्मलीनः तेष्वेवकोटिषु सङ्कल्पु रामभक्तः ॥ ३ ॥

भगवान् शिवजु बोले - हे मुग्धे पार्वती ! सुनो ! सडस्त्रों मनुष्यों में सर्वसमान शील धर्मप्रती कोह अेक ही मनुष्य  
होता है पुनः जैसे कोटि धर्मशीलों में सांसारिक विषयों से विरक्त कोह अेक ही होता है जैसे कोटि-कोटि विरक्तों  
के मध्य कोह अेक ही सद्ज्ञान से सम्पन्न और विमल तथा विज्ञानस्वरूप ब्रह्मलीन होता है। जैसे कोटि-कोटि  
ब्रह्मलीनों में कोह अेक ही निश्चय करके राम भक्त होता है ।

ये कल्पकोटिसततं जपडोमयोगैर्ध्यानैः समाधिभिरडो रतब्रह्मज्ञानात् ।

ते देवि धन्यमनुजा हृदि बाह्यशुद्धाः भक्तिस्तदाभवति तेषु य रामपादौ ॥ ४ ॥

भगवान् शिव बोले - हे देवि ! जिन्हींने कोटि-कोटि कल्पों तक जप-डोम-योग-ध्यान-समाधि करके तथा रात दिन ब्रह्मज्ञान में रत होकर हृदय तथा बाह्य दोनों को शुद्ध कर लिया है वे मनुष्य धन्य हैं। जैसे ही जनों में श्रीराम जू के चरणों में अनन्य भक्ति उत्पन्न होती है।

सम्यग्बद्धन्ति निगमा बहुसोऽवतारान् सद्ब्रह्मणोभुवितले निजभक्तछेतोः ।

यस्तान्नमेदनुद्दिनं य सलस्रजन्म रामस्य यैव छितदासमुपासकस्सः ॥ ५ ॥

निगमों अर्थात् थारों वेदों ने परमात्मा के निज भक्त हेतु बहुत से अवतार जो वर्णित किंसे हैं उन सम्पूर्ण अवतारों को सलस्र (अर्थात् अनन्त)जन्मों तक जब कोई अनुद्दिन नमन करता है तब जाकर वह श्रीरघुनाथ जू का सम्यक् अर्थात् सच्चा उपासक होता है।

बाह्यान्तरं शृणु तथा गिरिराजकन्ये त्वत्तो वदामि रघुनाथजनस्यशुद्धम् ।

अन्यदविहायसकलं सदसख्यकार्यं श्रीरामपङ्कज पदं सततंस्मरन्ति ॥ ६ ॥

भगवान् शिव बोले - हे गिरिराजकन्ये ! मैं तुमसे सत्य कलता हूँ, श्रीरघुनाथ जू के निज जन बाह्य और हृदय दोनों रूप से शुद्ध होते हैं और वे श्रीरामभक्त अन्य सम्पूर्ण सत-असत कार्य को छोड़कर श्रीराम जू के चरण कमलों का सतत स्मरण करते हैं।

श्रीरामनाम रसनाः प्रपठन्ति भक्त्या प्रेम्णा य गद्गदगिरोप्यथ वृषलोमाः ।

सीतायुतं रघुपतिं य किशोरमूर्तिं पश्यन्त्यलर्निशिमुदाप रमाभिरम्याम् ॥ ७ ॥

भगवान् शिव श्रीराम जू के अनन्य भक्तों के लक्षण बताते हुंसे माता पार्वती से कहते हैं - जिन श्रीराम जू के जनों की जिह्वा निरन्तर श्रीराम नाम का पठन करती है और भक्ति तथा प्रेम से जिनकी वाणी गद्गद हो गई है और रोमकूप रोमान्वित होकर अऽो हो गये हैं और जो श्रीसीता जू से संयुक्त श्रीरघुपति तथा उनकी परम उदार और रमाने वाली किशोर मूर्ति का दिन रात अवलोकन करते हैं उन्हें ही सर्वलक्षण सम्पन्न श्रीरामानन्य कहा जाता है।

भूमौ जलेनभशि देवनरासुरेषु भूतेषु देवि सकलेषु यथाचरेषु ।

पश्यन्ति शुद्धमनसा भलु रामरूपं रामस्य सा भुवितले समुपासकाश्च ॥ ८ ॥

भगवान् शिव बोले - हे देवि ! भूमि जल आकाश देवता असुर मनुष्य और सकल जऽः चैतन्य प्राणी मात्र में जो श्रीराम रूप को देखते हैं वे ही श्रीराम जू के सम्यक् उपासक हैं।

शान्तस्समानमनसा य सुशीलयुक्तः तोषक्षमागुणदयाऋजुबुद्धियुक्तः ।

विज्ञानज्ञाननिरतः परमार्थवित्तानिर्धामकोऽभयमनाः सचराम भक्तः ॥ ९ ॥

आगे श्रीराम भक्त का लक्षण बताते हुंसे भगवान् शिव कहते हैं कि सम दृष्टि से जिनका मन अत्यन्त शान्तवृत्ति को प्राप्त हो चुका है, जो सुन्दर शील से युक्त तथा तोष, क्षमा, दयादि गुणों से युक्त है और जो श्रीवैष्णवी दीक्षा के अनन्तर अर्थपञ्चकादि ज्ञान अर्थात् आत्म स्वरूप, परमात्म स्वरूप, उपाय स्वरूप, हल स्वरूप, विरोधी स्वरूप



के ज्ञान में निरत हैं जैसे परमार्थ वेत्ता जो निर्धाम अर्थात् गृहशून्य और अભय मन वाले हैं वे ही सम्यक् अर्थात् सख्ये राम भक्त हैं ।

भावे यरभ्यतिलकं विवरे यदीमं रामाङ्घ्रि चिह्नसङ्घितं श्रीयूर्णमध्ये ॥

कएठे तथा तुलसिदामलसद्भुजे वै तमेनभाषाधनुषाङ्कित राम भक्तः ॥ १० ॥

जिसके भाव में उज्ज्वल अर्थात् श्वेत वर्ण के श्री रामपादाङ्कित युक्त तथा मध्य में श्री यूर्ण अवस्थित है, जिसके कएठ में तुलसीमाला सुशोभित है और दोनों में भुजाओं में धनुष और बाण के चिन्ह अङ्कित हैं वे ही सत्य राम भक्त हैं ।

रामस्य यैव लृद्ये शुचि राजमन्त्रः श्रीराम नामसङ्घितो निजनामयुक्तः ।

सत्सङ्ग नित्यनिरतः श्रुतितत्त्ववेत्ता ज्ञातामडान् रघुपतेः समुपासकः सः ॥ ११ ॥

जिसके लृद्य में श्रीराम जो के डी पवित्र रामतारक षडक्षर मन्त्रराज हो और जिसका दीक्षोपरान्त नाम श्रीराम जो से सम्बन्धित हो (जैसे रामदास, रघुनाथदास, रघुनन्दनदास), जो सत्सङ्ग में नित्य रूप से निरत हो और जो श्रुति के तत्त्व को जानने वाला ज्ञानी हो वह ही श्रीरघुपति का मडान उपासक कहलाता है ।

ये जापका भागवताश्रतपस्विनो ये पूजारताःसुचरिताश्च विरागयुक्ताः ।

ज्ञानार्णवास्तिलकदामधरा यशस्विनस्तर्थाटिनः शुभगुणाश्शुभ कर्मयुक्ताः ॥ १२ ॥

सर्वेर्गुणैरपि य संयमनेमयुक्तोनिःकल्मषः सकलसिद्धिकरश्चनित्यं । योनाङ्कितोधनुशरैर्नयराजमन्त्रैर्नोपासको न स जनोरघुनन्दनस्य ॥ १३ ॥

भगवान् शङ्कर आगे कहते हैं कि जो आपका अर्थात् राममन्त्र छोड़कर अन्य मन्त्रों का जाप करते हुए भगवत अर्थात् वैष्णव धर्म को धारण कर पूजा में रत है, जिसका सुन्दर चरित्र है और वैराग्य से युक्त है, ज्ञान का समुद्र है, तिलक माला धारण करने वाला तथा यशस्वी और तीर्थाटन करने वाला है और सभी शुभ गुणों और कर्मों से युक्त है तथा संयम नियम आदि प्रतों से युक्त है और निष्कलमष अर्थात् सभी पापों से रहित है तथा सभी सिद्धियों से नित्य भूषित भी है परन्तु यदि श्रीरघुनन्दन रामभद्र के द्विव्यायुध धनुष और बाण से उसकी भुजाओं अङ्कित नहीं है और रामतारक षडक्षर मन्त्रराज से वह युक्त नहीं तो वह व्यक्ति न ही श्रीरघुनन्दन का उपासक और न ही उनका जन कहलाता है ।

सर्वसंस्कारमध्येतु धनुर्बाणोमडावरः ।

स्वामिन्नादौत्वयाप्रोक्तः कथमित्यभिधीयते ॥ १४ ॥

धनुर्बाण के अति उत्कृष्ट मडत्व को सुनकर पार्वतीजो शिव जो से पुनः प्रश्न करती हैं कि हे स्वामिन् ! आपने सभी संस्कारों में धनुषबाण को डी सभसे श्रेष्ठ बताया इसका कारण क्या है?

नित्यं प्रियः प्रियतरोरघुनन्दनस्य

बाणोधनुर्विमलमन्त्रषडक्षरश्च

भावे तदेव सकलेषु य चिह्न मध्ये

श्रेष्ठ मडाधनुशरं समुपासकेषु ॥ १५ ॥

भगवान् शिवः श्रुत्वा बोले - डे भाले! धनुषभाण तथा विमल चण्डर मन्त्रराज श्रीरघुनन्दन को नित्य प्रिय से भी अति प्रिय है। इसी कारण रामोपासकों के लिये सभी चिन्तों में धनुषभाण का संस्कार श्रेष्ठ है।  
ध्याने जपे विविधिपाठरताश्चनित्यं पूजारताः चण्डिकैर्दशभिः प्रकारैः ॥

अेतद्धनुःशरविवर्जितं कास्तुकूर्यु रामः प्रसीदति कदापि न यैव तेषाम् ॥ १६ ॥

ध्यान में तथा जप में और विविध प्रकार के स्तोत्रादि पाठ करने में तत्पर और सोलह प्रकार की पूजा (षोडशोपचार)के अधिकारी होने पर भी यदि धनुष और बाण के संस्कार से रहित कोई है तो उसके धन कृत्यों से श्रीरघुनाथ श्रु कदापि (कभी भी)प्रसन्न नहीं होते।

यज्ञं य तीर्थगमनं पितृदेवसर्वं कुर्वन्ति कर्मशुभकं श्रुतयोवदन्ति ।

येनाङ्कित्वा धनुशरैर्विकृतं य सर्वं येनाङ्कित्वाधनुः शरैश्च कृतं सलस्त्रम् ॥ १७ ॥

वेद (श्रुति)द्वारा प्रतिपादित यज्ञ, तीर्थगमन, पितृतर्पण आदि जितने शुभ कर्म हैं वे सभी धनुर्भाण के अङ्कन के बिना निष्फल अर्थात् व्यर्थ हो जाते हैं और धनुष-भाण से अङ्कित करने पर यही कर्म सलस्त्र गुणा कृतित हो जाते हैं।

यच्चात्कृतं शतगुणं धनुषः शरस्य यश्चाङ्कितोऽपि स य रामजनाग्रगण्यः ।

साङ्गयमेवलभते डिलतत्क्षणेवै रामः प्रियः प्रियतरोऽनुदिनं य मध्यम् ॥ १८ ॥

भगवान् शङ्कर माता पार्वती से कहते हैं कि हे शिवे! शङ्ख और चक्र से शतगुण अर्थात् सौगुना अधिक महत्त्व धनुषभाण के अङ्कन का है। जो जन श्रीराम श्रु के द्विव्यायुध धनुष और बाण से अङ्कित होते हैं वे श्रीराम श्रु के जनों में अग्रगण्य (श्रेष्ठ)होते हैं। जिस समय कोई धनुष भाण से अङ्कित होता है उसी क्षण वह श्रीराम श्रु के साङ्गय मुक्ति को प्राप्त कर लेता है और प्रतिदिन श्रीराम श्रु उसके लिये प्रियतर से भी महत्प्रियतर हो जाते हैं।

श्रुत्वा मडाद्भुतमिदं धनुषः शरस्य माडात्यमेव विमलंसज्जनप्रियं य ।

धन्यावयं जगति धन्यतराश्चनित्यं कस्मात्करोतिग्रहणं विधिना य केन ॥ १९ ॥

माता पार्वती भगवान् शिव से बोलीं - मडाद्भुत विमल सज्जनों को अति प्रिय यह धनुषभाण के माडात्य को सुनकर जगत में अपने जन्म को धन्यातिधन्य मैं मानती हूँ परन्तु धनुष-भाण संस्कार किससे ग्रहण करना चाडिओ और किस विधि से ग्रहण करना चाडिओ?

यः सद्गुरुर्जगति यस्य गुरुप्रभावो रामस्य यैव सततं समुपासकोयः ।

सम्पूजयेत्सुविधिना रघुनाथभाणं बध्वाकराञ्जलिमथो प्रणति प्रकुर्यात् ॥ २० ॥

भगवान् शिव श्रु बोले - जगत में जिसका अत्यन्त प्रभाव हो जैसे सद्गुरु और श्रीरामश्रु की सतत उपासना करने वाला जो पुरुष हो वह श्रीराम श्रु के आयुध धनुष भाण को सुन्दर विधि से पूजन करे और फिर दोनों हाथ जोड़कर धनुष और बाण को प्रणाम करे।

तेन प्रसन्नमनसा समुदारबुद्ध्या तमन्धनुःशरमिदं भुजयोः प्रकुर्व्यात् ।  
 पूंजा पुनः प्रकुरुतेविविधैश्चरत्तैस्तस्मिन्क्षेत्रेणैवति ज्वन अेव मुक्तः ॥ २१ ॥  
 तत्र गुरु प्रसन्न मन लोकर उदार बुद्धि से शिष्य के भुजा के मूल में यह धनुष और बाण को तपा कर अङ्कित करे ।  
 इसके पश्चात् शिष्य विविध प्रकार से श्रीगुरुदेव की पूजा करे इस प्रकार धनुष-बाण संस्कार होने पर पुरुष उसी  
 क्षण ज्वन मुक्त हो जाता है ।

वामे करे य धनुषा य शरेण सव्ये यश्चाङ्कितोऽहो मनुजो नरलोकधन्यः ।  
 तस्मै नमन्ति शिरसा द्रुहिणोऽदिदेवास्तद्दर्शनेन मनुजाडिल कल्मषघ्नाः ॥ २२ ॥  
 जिस पुरुष के बाएँ भुजा में धनुष और दाहिने में बाण अङ्कित होता है वह मनुष्य नर लोक में धन्य है और  
 ब्रह्मादि देव उस पुरुष को नमस्कार करते हैं और उस पुरुष के दर्शन से मनुष्य के पाप का नाश होता है ।  
 त्वत्तोविधिं शृणु शिवे कथयामि सर्वं बाणधनुश्च वसुधातुमयम्प्रकुर्व्यात् ।  
 कृत्वा यथोक्त विधिना सकलां प्रतिष्ठां संस्थापयेद्युः उनुमान य गणेश गौर्यौ ॥ २३ ॥

भगवान् शिव बोले - हे शिवे ! धनुष और बाण संस्कार की सम्पूर्ण विधि को मैं तुमसे कहता हूँ । प्रथम वसुधातुमय  
 अर्थात् अष्टधातु से धनुषबाण निर्माण करें फिर यथोक्त विधि से धनुष बाण की प्रतिष्ठा करके श्रीगणेश ज्यु और  
 गौरी तथा उनुमान ज्यु का संस्थापन करें अर्थात् आवाहन सुपूजन करें ।  
 अग्नौविशुद्ध उविषा विविधैः सुगन्धैर्दोमं सुवेदविधिना शरशाङ्ग मन्त्रैः ।  
 अष्टोत्तरशतमथो जुहुयात्सुभक्तो रामस्मरेद्दृष्टितदाजनकात्मजाढ्यम् ॥ २४ ॥  
 सुन्दर प्रज्ज्वलित अग्नि में विविध प्रकार के शुभ सुगन्धि सम्पन्न उविषों द्वारा सुन्दर वैदिक विधि से शरशाङ्ग  
 (धनुषबाण)के मन्त्रों से १०८ बार आहुतियां दें । इसके साथ ही भक्ति पूर्वक उद्यम में जगत्शरण्य प्रभु श्रीराम  
 सहित वात्सल्यरससम्पन्ना श्रीजनकात्मजा जनकीज्यु के दिव्य स्वरूप का ध्यान करें ।

तमं धनुश्शरमथोऽभलुतत्र लोमे प्रेमसाङ्कितं सुमनसा य गुरुः प्रकुर्व्यात् ।  
 देशेषुचैव सकलेष्वपि सर्वं काले वार्णाश्रमाश्च सकलाङ्कित पुण्य पुञ्जाः ॥ २५ ॥  
 उवन के पश्चात् उसी उवन की अग्नि में धनुष बाण को तपित कर श्रीगुरु प्रेम सहित पवित्र मन से शिष्य को अङ्कित  
 करें अर्थात् धनुष बाण की छाप दें और इस धनुष बाण के अङ्कन का सर्वदेह तथा सर्वकाल में लेने का विधान है  
 और ब्राह्मणोऽदि चारों वर्णों तथा ब्रह्मचर्यादि चारों आश्रम इस धनुष और बाण से अङ्कित होने पर पुण्यों  
 के पुञ्ज (पुण्य समूह)कहाते हैं ।

श्रीरामसंस्कारविवर्जिता ये निष्पुञ्जशृङ्गाः पशवो नरास्तो ।  
 शक्ता न वेदा अभिवर्णितुंयत्त्वत्तोमयाप्यातमविस्तरेण ॥ २६ ॥  
 भगवान् शिव कहते हैं कि श्रीराम ज्यु के संस्कार से जो वर्जित है वे पुरुष बिना पूँछ और सीङ्ग वाले पशु के  
 समान हैं । हे पार्वती! धनुष बाण की मछिमा का जो वर्णन जो मैंने तुमसे सङ्क्षिप्त रूप में किया है इस धनुष बाण  
 के महत्त्व को विस्तार पूर्वक वर्णन करने में वेद भी समर्थ नहीं हैं अर्थात् इस धनुष बाण के अङ्कन की अनन्त  
 मछिमा है ।

अळं विधाता गरुडःध्वजश्च रामस्यबावेसमुपासकानाम् ।

गुणाननन्तान् कथितुं न शक्ताः सर्वेषुभूतेष्वपि पावनास्ते ॥ २७ ॥

मैं (शिव), विधाता (ब्रह्मा)और गरुडःध्वज (भगवान विष्णु)भी श्रीरामोपासकों के अनन्त गुणों का वर्णन करने में समर्थ नहीं हैं। वे श्रीरामोपासक सभी भूतों (जुवों)के मध्य निश्चित रूप से अतिपवित्र हैं अर्थात समस्त ब्रह्माण्डों को पावन करने वाले हैं ।

- षति श्रीमन्मडारामायणे उमामहेश्वर संवादे रामोपासक संस्कार कथन नामैकोनपञ्चाशत्सर्गः ॥ ४८ ॥

## ५०

रामस्थानन्यदासानां श्रुतंसंस्कारभुत्तमम् ।

सुभम्मे परमं जातमन्यत्वृष्णामि ते पुनः ॥ १ ॥

माता पार्वती जो भोलीं कि डे नाथ! श्रीरामजो के अनन्य दास सम्बन्धी उत्तम संस्कार को सुनकर मुजे परम सुभ उत्पन्न हुआ अब मैं आपसे अन्य कुछ सुनना चाडती हूँ ।

क्षराक्षरौनिर्वर्णौ निर्वर्णातीतमद्भुतम् ।

भेदभेषां वदस्वामिन् ज्ञात्वा मामनुगामिनीम् ॥ २ ॥

माता पार्वतीजो आगे प्रश्न करती हैं - डे स्वामिन्! मुजको अनुगामिनी अर्थात अपनी सेविका जानकर क्षर, अक्षर, निर्वर्ण तथा निर्वर्णातीत शब्द वाच्य षन चारों का भेद आप मुजसे कडिअे ।

किङ्करं चाक्षरं किं च किं निरक्षरमेव च ।

किं वै निरक्षरातीतं सर्वं कथय विस्तरात् ॥ ३ ॥

माता पार्वती आगे कडती हैं - डे नाथ! क्षर अक्षर निरक्षर और निरक्षरातीत तत्त्व क्या डे षसे आप विस्तार से कडिअे ।

मायामयादिकंसर्वं पञ्चतत्त्वोद्भवं तनुम् ।

दृष्टं श्रुतादिकञ्चैव क्षरमित्याभिधीयते ॥ ४ ॥

भगवान शिव बोले कि पृथ्वी जल वायु अग्नि आकाश षन पाञ्चों तत्त्व से उत्पन्न कीट भूङ्गादि से लेकर ब्रह्मा तक डे शरीर और दृष्टश्रुत (देषा और सुना गया)मायामय पदार्थ अर्थात समस्त ब्रह्माण्ड क्षरपद वाच्य डे ।

नोटः- यड क्षर पदार्थ परिवर्तन शील डे ।

व्यापकः सर्वभूतेषु यस्थनाशः कदापि न ।

जुवात्मा सर्वगोभेधः सोऽक्षरो भूधरात्मजे ॥ ५ ॥

भगवान् शिव बोले - हे भूधरात्मजे! सम्पूर्ण भूतों में जो व्याप्त जो अणुयेतन अर्थात् जो अविनाशी है और कर्म द्वारा स्वर्गास्वर्ग में गमन करने वाला और जो लुप्त्य देशादि से अविच्छिन्न है वह ज्ञुवात्मा ही अक्षर पद वाच्य है ।

सर्व साक्षी चिदानन्दो निर्द्दन्तोऽभाएऽश्वेव यः ।

परमात्मा परब्रह्म कथ्यते स निरक्षरः ॥ ६ ॥

जो सभी ज्ञुवात्माओं द्वारा किओ गओ शुभाशुभ कर्मों के साक्षी हैं तथा चिदानन्द से सम्पन्न हैं और निर्द्दन्त (द्वन्द्वों से परे) तथा अभाएऽ (जिनके भाएऽ नहीं हो सकते) परमात्मा हैं उन्हीं परब्रह्म को निरक्षरपद वाच्य कहा जाता है ।

असङ्ख्यमित्रवत्तेजो वेदाअपि न यं विदुः ।

स वै निरक्षरातीतो रामः परतरात्परः ॥ ७ ॥

जिनमें असङ्ख्य सूर्यों का तेज (प्रकाश) विद्यमान है और वेद भी जिनको जान नहीं सकते हैं जैसे निष्पिल परतर परब्रह्म से भी पर जो श्रीरामजु हैं उन्हीं को निरक्षरातीत पद वाच्य कहा जाता है ।

यो वै वसति गोलोके द्विभुजश्च धनुर्धरः ।

ब्रह्मानन्दमयोरामो येन सर्वं प्रतिष्ठितम् ॥ ८ ॥

जो नित्य द्विभुज धनुर्धर स्वरूप में गोलोक के मध्य साकेत मडामणि माएऽप में निवास करते हैं वे श्रीराम ब्रह्मानन्दमय हैं जिन में समस्त जगत प्रतिष्ठित है ।

भूतः क्षरोऽक्षरश्चांशः कलाश्चैव निरक्षरः ।

स्वयं निरक्षरातीतः स अवे जानकीपतिः ॥ ९ ॥

भगवान् शिव कहते हैं कि क्षर पद वाच्य प्रकृति है जो अखित तत्त्व है और अक्षर पद वाच्य ज्ञुवात्मा है जो खित तत्त्व है ये दोनों ही श्रीराम जु के अंश हैं । निरक्षर पद बोध्य जो ब्रह्म है वह श्रीरघुनाथ जु के कला स्वरूप हैं पर श्रीजानकीपति तो स्वयं निरक्षरातीत हैं अर्थात् समस्त कलाओं के स्वामी हैं ।

ईक्षाभूतः क्षरस्तस्य याक्षरस्तेज उच्यते ।

निरक्षरो धनस्तेजो वर्तते जानकीपतेः ॥ १० ॥

उन्हीं श्रीजानकीपति के अंश जो क्षर पद वाच्य है वह अखित तत्त्व उनका सङ्कल्प रूप है और अक्षर पद वाच्य ज्ञुवात्मा जो श्रीराम जु का येतन अंश है वह श्रीराम जु के अणु तेज का स्वरूप है और निरक्षर शब्द बोध्य जो ब्रह्म है वह श्रीरघुनाथ जु के तेजधन अर्थात् तेज समूह का स्वरूप है ।

स्वयं निरक्षरातीतो रामश्चेवईतिश्रुतिः ।

ब्रह्मज्ञाननिमग्ना ये भजन्ति सनकादयः ॥ ११ ॥

श्रीराम पद वाच्य अशेष कारण परब्रह्म ही स्वयं निरक्षरातीत हैं यह श्रुति कहती है और उन्हीं निरक्षरातीत श्रीराम जु के ज्ञान (उन्हें जानने) में निमग्न सनकादिक ऋषिगण उनका निरन्तर भजन करते हैं ।

य अेतदभिजानाति गुधाद्गुह्यतमं मतम् ।

तस्य यैवायलाभक्तिः स रामोपासको मडान् ॥ १२ ॥

जो पुरुष षस गुम से भी परम गुम सिद्धान्त को अच्छी प्रकार जानता है वही पुरुष श्रीराम जो की अयला भक्ति को प्राप्त करके मडान रामोपासक कडलाता है ।

ये य राममयं विश्वं पश्यन्ति ज्ञान यक्षुषा ।

ये य रामाङ्घ्रि संरक्ता श्रीरामोपासकाश्चते ॥ १३ ॥

जो समस्त विश्व को अपने ज्ञानयक्षु (रामभक्ति द्वारा जो मडान दिव्य दृष्टि प्राप्त हुँ है उस नेत्र से) राममय देभता है और जो श्रीराम जो के यरणों में संरक्त (निरन्तर निमग्न) है वही सख्या श्रीरामोपासक है ।

ज्ञान विज्ञान योगैः किं तपोध्यान समाधिभिः ।

तत्त्वमेतं नजानाति श्रम अेवडि केवलम् ॥ १४ ॥

ज्ञान, विज्ञान, योग से क्या लाभ? और तप, ध्यान तथा समाधि से क्या प्रयोजन? यदि श्रीराम जो के मडादिव्य परम रहस्यमय तत्त्व को डिसी ने नहीं जाना तो उसने केवल श्रम ही किया उसे कोई फल नहीं प्राप्त हुआ ।

परमेश्वरनामानि सन्त्यनेकानि पार्वति ।

परन्तु रामनामेदं सर्वेषामुत्तमोत्तमम् ॥ १५ ॥

भगवान शङ्कर कडते हैं - हे पार्वती! परमेश्वर के अनेकों दिव्य नाम हैं परन्तु यड जो राम नाम है वड सभी नामों में उत्तमोत्तम (उत्तम में भी परम उत्तम) है ।

रामस्यैव रमुक्रीडा नाम्नो नान्यस्य जायते ।

जुवोऽतअेव रामस्य स्मरणत्तु गतिं लभेत् ॥ १६ ॥

सभी नामों में यड राम नाम ही कीडः ार्थक रं धातु से निष्पादित है षसलिये जुव राम नाम ही के स्मरण से परम गति को प्राप्त कर सकता है ।

केचिद्ब्रह्मसभायं य केचिद्दासं वदन्ति य ।

किंसरुपस्तु जुवोयं स्वामिन् कथयविस्तरात् ॥ १७ ॥

माता पार्वती शङ्कर जो से कडती हैं - हे स्वामी कोई आचार्य जुव को ब्रह्म का सभा बताते हैं कोई कोई दास बताते हैं। आप ही मुझे विस्तार से बताइये कि जुव का स्वरुप क्या है?

दासवधोऽभिजानाति दासस्तेषामिति स्मृतः ।

येजानन्ति सभातुल्यं सभिवत्तानथोदितः ॥ १८ ॥

जो आचार्य (ब्रह्म दासा) षस श्रुति के सिद्धान्त से अपने को दास और ब्रह्म को स्वामी भाव से जानते हैं उनके मत में दास्य रस ही हीक है और कुष आचार्य (द्वा सुपर्णा सयुजा सभायाः) षस श्रुति के सिद्धान्त से अपने को ब्रह्म का सभा जानते हैं उनके लिये सभ्य भाव का वर्णन किया गया है ।

ये पश्यन्ति सभ्रीभावं सभ्रीत्वम्प्राप्नुवन्ति ते ।

ब्रह्मात्मकं य ये ज्ञुवं तेषाम्ब्रह्म धत्तिस्मृतः ॥ २० ॥

जो परब्रह्म श्रीरघुनाथ ज्ञु को सप्तीभाव की दृष्टि से निडारते हैं वे सप्ती भाव को प्राप्त होते हैं और जो ज्ञुव को ब्रह्मात्मक अर्थात् ज्ञुव को ब्रह्म विशेषणी भूत शरीर भाव से और ब्रह्म को विशेष्य भूतशरीरी (अर्थात् ज्ञुव को ब्रह्म का अंश)जानता है वह इसी शरीर-शरीरी भाव को प्राप्त होता है ।

श्रीरामं ये य छित्वा भलमतनिरता ब्रह्मज्ञुवं वदन्ति ।

तेमूढानास्तिकास्ते शुभगुणरहिताः सर्व बुद्ध्यातिरिक्ताः ॥

पापिष्ठाधर्महीना गुरुजन विमुग्धा वेदशास्त्रे विरुद्धास्ते ।

छित्वागाङ्गं रविकिरिण जलं पान्तुमिच्छन्त्यतुमाः ॥ २१ ॥

अब भगवान शङ्कर शुष्क अद्वैतियों का तिरस्कार करते हैं और कहते हैं कि जो दृष्ट सिद्धान्त में आसक्त होकर श्रीराम ज्ञु की उपासना को त्यागकर ज्ञुव को (श्रीराम ज्ञु का अंश)न बताकर ज्ञुव को ही ब्रह्म (श्रीराम)भताते हैं वे मूर्ख नास्तिक हैं और सप्ती शुभ गुणों से रहित तथा भगवान श्रीराम के प्रति व्यवसायात्मिका बुद्धि से रिक्त हैं। ऐसे पापिष्ठ, धर्महीन और गुरुजनविमुग्ध वेद शास्त्रों के विरुद्ध होकर उसी प्रकार सम्भाषण करते हैं जैसे अत्यन्त प्यासे होने पर कोई मूर्ख गङ्गा जल को छोड़कर भूम जल (निःकृष्ट जल)को पान करना चाहते हैं ।

ये मर्त्या रामपादौ सुभप्रदविमलौ सं विडायार्त्तं भन्धोः ।

ते मूढा बोध छेतुं धृतपरिघटने वारिभन्धान युक्ताः ॥

यो ब्रह्मास्मीति नित्यं वदति लृष्टिं विना रामयन्द्वाङ्घ्रिपद्मम् ।

ते बुद्ध्या त्यक्तपोतास्तृण परिनिथये सिन्धुमुग्नं तरन्ति ॥ २२ ॥

भगवान शिव ज्ञु कहते हैं कि जो पुरुष दीनबन्धु रघुनाथ ज्ञु के सुभप्रद चरण कमल को त्यागकर अपने और ब्रह्म में अभेद बोध छेतु साधन में लगा है उसका साधन उसी प्रकार का है जैसे कोई घी निकालने के लिये पानी को मथने का व्यर्थ साधन करे। श्रीरामयन्त्रज्ञु के चरणकमल का ध्यान किसे बिना जो अपने को “अहं ब्रह्मास्मि” (मैं ही ब्रह्म हूँ)ऐसा कहता है वह उसी प्रकार व्यर्थ साधन करता है जैसे कोई सिन्धु तारक जडाज को छोड़कर मन में कल्पित घास की नौका बनाकर द्रुस्तर सिन्धु को तरने का निष्फल प्रयास करता है ।

ये डेवलाद्वैतमतानुरक्ताः श्रीराममूर्तिं विमलां विडाय ।

तेषामदृश्यां हरिदश्वमूर्तिं पश्यन्तिमूढाः प्रतिबिम्ब कुम्भे ॥ २३ ॥

भगवान शिव कहते हैं कि जो पुरुष विमल अर्थात् प्राकृत गुण शून्य, शुद्ध, दिव्य श्रीरघुनाथ ज्ञु की मूर्ति को छोड़कर डेवलाद्वैतवाद मत में अनुरक्त हैं वे ऐसे ही हैं जैसे कोई आकाश के प्रत्यक्ष सूर्य को न देखकर घडः में जो सूर्य का प्रतिबिम्ब पडः रखा है उसको देखे ।

ये रामभक्तिं सु विडाय रम्यां ज्ञानेरताप्रतिदिनं परिक्लिष्टमार्गं ।

आरान्मडेन्द्र सुरभीं प्रहृत्यमूर्धा अर्कं भजन्ति सुभगे सुभ दुग्धलेतोः ॥ २४ ॥

भगवान् शङ्कर माता पार्वती से कडते हैं कि हे सुभगे! जो पुरुष रमणीय विमल श्रीरामभक्ति को छोड़कर अत्यन्तकलेश दायक अद्वैत ज्ञान मार्ग में प्रति दिन अनुराग करते हैं वे मूर्ख समीप में कामधेनु को छोड़कर सुभद्रप दृग्ध निमित्त आक (मदार)का सेवन करते हैं ।

त्यक्त्वा श्रीरघुनन्दनं परतरं सदृशानरुपं तथा  
ब्रह्माण्येव वदन्ति ये सदसतोः पूर्णसदाकाशवत् ॥

ते वै तन्मूल उेतवे तुषमडोनिघ्नन्ति दुर्बुद्धयः  
छित्वा मूलमुपाश्रयन्ति य एलं तैः सदुरुर्नोकृतः ॥ २५ ॥

भगवान् शिव जू कडते हैं कि परात्पर ज्ञान स्वरूप श्रीरघुनाथ जू को छोड़कर सदसत् में पूर्ण आकाशवत् ब्रह्म को बताते हैं अर्थात् अगुण ब्रह्म की उपासना करते हैं ये सब आश्चर्यमय दुर्बुद्धियों के कर्तव्य हैं अर्थात् उसी प्रकार है जैसे कोठ यावल पाने के लिअे भूसा को कूटता रहे और मूल को काट कर पत्ते का आश्रय ले ले जैसे कि उस मूर्ख ने कभी सदुरु का आश्रय लिया डी नहीं ।

किं वर्णयामि विमले बहुभिः प्रकारैः

सीतापतेर्विगत ज्ञान विशेष सर्वम् ।

ज्ञानं तदेवकुसुमं य यथा न भोजं  
सत्यंवदामि य तदा न सुभं य स्वप्ने ॥ २६ ॥

भगवान् शिव कडते हैं कि हे विमले! बहुत प्रकार से मैं ज्या वर्णन करूँ (ज्यादा ज्या कडूँ) बस ठतना डी समजो)कि श्रीसीतापति जू के सम्बन्ध बिना निष्पिल ज्ञान आकाशपुष्प के समान निरर्थक है और सत्य कडता डूँ कि वडाँ पर सुभ स्वप्न में भी नहीं है जडाँ श्रीरामजु प्रतिष्ठित नहीं है ।

- ठति श्रीमन्मडाराभायणे उमामडेश्वर संवाडे क्षराक्षरनिरक्षरातीतभेडे द्वैताद्वैत निर्णयो नाम पञ्चाशततमः सर्गः ॥ ५० ॥

## ५१

सम्प्रवक्ष्यामि जनक्याः त्रयः त्रिंशत्शततयः ।

निकटे संस्थिता नित्यं सर्वाभरणभूषिताः ॥ १ ॥

श्रीर्भूलीला तथोत्कृष्टा कृपायोगोन्नती तथा ।

ज्ञानापर्वी तथा सत्या कथिता चाप्यनुग्रहा ॥ २ ॥

ठशाना चैव कीर्तिश्च विद्येला कान्तिलम्बिनी ।

चन्द्रिकापि तथाङ्कुरा कान्ता वै भीषणी तथा ॥ ३ ॥

क्षान्ता य नन्दिनी शोका शान्ता य विमला तथा ।

शुभदा शोभना पुण्या कला चाप्यथ मालिनी ॥ ४ ॥



मडोदयाह्लादिनीः च शक्तिरेकादशत्रिका ।

पश्यन्ति भृकुटीं तस्या जानक्या नित्यमेव च ॥ ५ ॥

शिवञ्च माता पार्वती से बोले कि श्रीजानकी ञ्चु की अंश जो उ३ शक्तियां हैं, उन्हें कडता हूँ सुनो, जानकीञ्चु के समक्ष ये नित्य रहती हैं । श्री १, भू देवी २, लीला देवी ३, तथा उत्कृष्ट ४, कृपा ५, योगा ६, उन्नती ७, ज्ञाना ८, पर्वी ९, तथा सत्या १०, अनुग्रहा ११, धशाना १२, कीर्ति १३, विधा १४, धला १५ कान्ति १६, लम्बिनी १७, यन्द्रिका १८, तथा कुरा १९, कान्ता २०, लीषणी २१, क्षान्ता २२, नन्दिनी २३, शोका २४, शान्ता २५ और विमला २६, शुभदा २७, शोभना २८, पुण्या २९, कला ३०, और माविनी ३१, मडोदया ३२, आह्लादिनी ३३, यल तैन्तीस शक्तियाँ श्रीजानकी ञ्चु की भुकुटी देवती रहती हैं और भृकुटि के दिमाने से सब कोठ अपने अपने कार्य को करती हैं ।

श्रीश्च श्रीः प्रेरिका ज्ञेया भूरपाधार उच्यते ।

लीला बलुविधा लीला उत्कृष्टोत्कर्षप्रेरिका ॥ ६ ॥

कृपया शुभ कृपा सम्यग्योगायोगान्विता गतिः ।

उन्नती मडती वृद्धिं ज्ञाना विज्ञानप्रेरिका ॥ ७ ॥

करोति प्रेरणं सम्यक् पर्वी जयपराजयौ ।

सत्यस्य प्रेरिका सत्यानुग्रहार्था दयागुणाः ॥ ८ ॥

ये च सर्वे जगन्मध्ये भेदा अपि सुदुस्तराः ।

धशाना प्रेरिका तेषां वर्तते नात्र संशयः ॥ ९ ॥

यशोऽधिकारिणी कीर्तिर्विधाविधाधिकारिणी ।

सद्भाषी प्रेरिकेवास्यात्कान्ता कान्तिविवर्द्धिनी ॥ १० ॥

यानि धामानि सर्वाणि श्रीरामस्याद्भुतानि च ।

गुणाश्चान्तर्गुणाणि प्रेरिकेषां विलम्बिनी ॥ ११ ॥

शीतं प्रकाशयोस्सम्यक् प्रेरिका यन्द्रिकापि च ।

कूरत्वं प्रेरिका कूरा मनोवाक्कायकर्मणिः ॥ १२ ॥

प्रेरका योभयोः कान्ता रागमोडौ शुभाशुभौ ।

प्रेरिका लीषणी तेषां ये च सर्वे भयादयः ॥ १३ ॥

वर्तन्ते प्रेरिका क्षान्ता क्षमा गुणविशेषतः ।

नन्दिनी च तथा शक्तिः सर्वानन्दप्रदायिनी ॥ १४ ॥

सम्पूर्णा ब्रह्माण्ड में श्री की प्रेरणा करनेवाली श्रीदेवी शक्ति हैं १। ब्रह्माण्ड की आधार भूदेवी शक्ति हैं २। सम्पूर्णा लीला की प्रेरक लीला देवी हैं ३। सब उत्कर्ष की प्रेरक उत्कृष्टा शक्ति हैं ४। सम्पूर्णा कृपा की प्रेरक कृपा शक्ति हैं ५। अष्टाङ्ग योगादि की प्रेरक योगाशक्ति हैं ६। सकल वृद्धि की प्रेरक उन्नति शक्ति हैं ७। ज्ञान विज्ञान वैराग्यादि की प्रेरक ज्ञाना शक्ति हैं ८। जय पराजय की प्रेरक पर्वी शक्ति हैं ९। सत्य की प्रेरक सत्या शक्ति हैं १०। दयादिक गुण की प्रेरक अनुग्रहा शक्ति हैं ११। सम्पूर्णा दुस्तर भेदों की प्रेरक धशाना शक्ति हैं १२। सुयश

की प्रेरक कीर्ति शक्ति हैं १३। सम्पूर्णा विधा की प्रेरक विधा शक्ति हैं १४। सद्गाणी की प्रेरक धवा शक्ति हैं १५। सर्व क्रान्ति की प्रेरक क्रान्ता शक्ति है १६। और तीन लोक चौदहों भुवन और १०८ वैकुण्ठ हैं सो सब श्रीरामज्जु के धाम हैं और भगवान के असङ्ख्यगुण जो हैं और वे जितने रूप धारण करते हैं, अंश कला विभूति आवेशादि ये सभी विलम्बिनी शक्ति द्वारा प्रतिपादित किया जाता है १७। शीत प्रकाश की प्रेरक चन्द्रिका शक्ति हैं १८। क्रूर हैं अक्रूर परन्तु सम्पूर्णा क्रूरता की प्रेरक हैं सो क्रूर शक्ति हैं १९। सब राग मोह शुभाशुभ की प्रेरक क्रान्ता शक्ति हैं २०। सकल भय की प्रेरक भीषण शक्ति हैं २१। क्षमागुण की प्रेरक क्षमा शक्ति हैं २२। आनन्द की प्रेरक नन्दिनी शक्ति हैं २३।

शोका स्वयं विशोका य लोकानां शोक प्रेरिका ।  
 शान्तिप्रदायिनी शान्ता विमला विमलान् गुणान् ॥ १५ ॥  
 शुभदा सद्गुणान् शोभां प्रेरयन्ति य शोभना ।  
 पुण्यापुण्यगुणोपेता कला बहुकलावती ॥ १६ ॥  
 मालिनी व्यापकान्सर्वान्प्रेरयेच्च मधोदयान् ।  
 विभवं प्रकृतिर्भक्तिं विस्तारयति सर्वतः ॥ १७ ॥  
 आह्लादिनी मडाऽऽह्लादं संवर्द्धयति सर्वदा ।  
 स्वे स्वे कार्ये रतास्सर्वाः त्रयः त्रिशय्य शक्तयः ॥ १८ ॥  
 यस्मिन्काले भवेधासां सीतारामानुशासनम् ।  
 तस्मिन्काले प्रकुर्वन्ति सर्वं कार्यमशेषतः ॥ १९ ॥  
 ऐकैकानां सङ्स्त्राणि वर्तते योपशक्तयः ।  
 व्यापकास्सर्वलोकेषु गगनमिव सर्वतः ॥ २० ॥  
 शोका शक्ति हैं अशोक परन्तु सम्पूर्णा ब्रह्माण्ड भर में शोक की प्रेरणा करती हैं २४। शान्ति की प्रेरक शान्ता शक्ति है २५। विमलगुण की प्रेरक विमला शक्ति है २६। सद्गुण की प्रेरक शुभदा शक्ति है २७। सुन्दरता की प्रेरक शोभना शक्ति है २८। पुण्य की प्रेरक पुण्या शक्ति है २९। सकलगुण और ङ कला की प्रेरक कलावती शक्ति हैं ३०। सर्वत्र व्यापकता की प्रेरक मालिनी शक्ति है ३१। और सम्पूर्णा विभव प्रकृति गुण के और भक्ति की प्रेरक भक्ति शक्ति है ३२। परम आह्लाद जो ब्रह्मानन्द है उसकी प्रेरक अह्लादिनी शक्ति है ३३। ये सब शक्ति अपने-अपने कार्य में रत रहती हैं जिस काल में श्रीसीतारामज्जु की आज्ञा होती है उसी काल में सर्व शक्ति सर्व कार्य को विशेष पूर्वक करती हैं। इन सब शक्तियों की हजारों हजारों उपशक्ति अर्थात् आज्ञा पालन करने वाली दासी हैं सो सर्वलोक में आज्ञा के समान व्याप्त हो रही हैं।

- एति श्रीमन्मडारामायणे उमा मधेश्वर संवादे ऐक पञ्चाशत्तमः सर्गः ॥ ५१ ॥

५२

मुहुर्मुहुः त्वयाप्रोक्तं रामनाम परात्परम् ।

तदर्थम्ब्रूहि भोस्वामिन् कृत्वामपिदयांलृदि ॥ १ ॥

माता पार्वती शङ्करञ्च से ओली - हे स्वामी! आपने श्रीराम नाम को परात्पर अर्थात् सकल ब्रह्म वाचक नामों से अति उत्कृष्ट बार-बार बताया इसलिये अपने लृद्य में आप मुझ पर दया करके उस राम नाम के अर्थ को कछिये ।

त्वमेव जगतामध्ये धन्या धन्यतराप्रीये ।

पृष्टन्त्वया मलत्तत्त्वं रामनामार्थमुत्तम् ॥ २ ॥

भगवान् शङ्कर बोले - इस जगत के मध्य तुम धन्यातिधन्य हो पार्वती! ज्योड्ढि तुमने मलत तत्त्व (परम तत्त्व)श्रीराम नाम के अर्थ को मुझसे पूछा है ।

वेदाः सर्वे तथा शास्त्रामुनयश्च सुरर्षभाः ।

नाम्नः प्रभावमत्युग्रं तेऽभिजानन्ति सुप्रते ॥ ३ ॥

भगवान् शिव बोले - हे सुप्रते पार्वती! श्रीराम नाम के अति उग्र प्रभाव को ऋगादिक यारों वेद तथा छल दर्शनों के वेत्ता मननशील मुनि वृन्द सुर श्रेष्ठ बृलस्पति प्रभृति जानते हैं ।

राम अेवाभि जानाति कृत्स्नं नामार्थमद्भुतम् ।

धषद्ददामिनामार्थं देवि तस्यानुकम्पया ॥ ४ ॥

भगवान् शिव कलते हैं यद्यपि वेदादि शास्त्र राम नाम के ज्ञाता हैं लेकिन वे कार्य रूप होने से पूर्णरीत्या राम नाम के ज्ञाता नहीं हो सकते हैं ज्योड्ढि राम नाम सबका कारण है अतएव हे देवि! इस राम नाम के अद्भुत मलत्व को सम्यक रूप से श्रीराम ही जानते हैं और उनकी अनुकम्पा से अर्थात् इषा से कुछ मैं जानता हूँ वही तुमसे कलता हूँ उसे सुनो ।

कोटि कन्धर्ष शोभाढ्ये सर्वाभरणभूषिते ।

रभ्यरुपाएविरामे रमन्ति सनकादयः ॥ ५ ॥

भगवान् शिव राम नाम की पलवी निरुक्ति अर्थात् अर्थ बताते हैं - करोडों कामदेवों की शोभा से युक्त सर्वाभरणभूषित रमणीय शोभा के सिन्धु श्रीराम में सनकादि मलर्षि वृन्द रमण करते हैं ।

अतएव रमुकीऽं रामनाम्नः प्रवर्तते ।

रमन्ति मुनयस्सर्वे नित्यं यस्याङ्घ्रि पङ्कजे ॥ ६ ॥

श्रीराम ञ्च के यरण कमलों में सभी मुनि गण नित्य रमते रलते हैं इसलिये ही रमुकीऽं धातु से राम नाम प्रवर्तित होता है ।

अनेक सभिभिः साकं रमते रासमण्डले ।

अतएव रमुकीऽं रामनाम्नः प्रवर्तते ॥ ७ ॥

अनेक सभियों के सलित रासमण्डल के मध्य श्रीरामञ्च रमण करते हैं इसलिये रमुकीऽं धातु का आचार्यों ने राम नाम के व्युत्पत्ति हेतु निर्माण किया है ।

ब्रह्मज्ञाननिमग्नोपि जनको योगिनां वरः ।

छित्वा रमन्ति ते रामे रमुक्कीऽःातयेव वै ॥ ८ ॥

निभिल योगी वृन्द में श्रेष्ठ श्रीमिथिलेश जनक जे ब्रह्म ध्यान में निमग्न होने पर भी उस ब्रह्मानन्द को छोड़कर श्रीरघुनाथ जे के परमानन्द में रम जाते हैं उसलिये डी रमुक्कीऽःा धातु की सार्थकता राम नाम से होती है ।

आबालतो विरक्तोऽयं यामदग्निर्दरिःस्मृतः ॥

स अयेव रमते रामे रमुक्कीऽःा ततोऽनघे ॥ ९ ॥

भगवान शिव कडते हैं कि डे अनघे! यामदग्नि पुत्र परशुरामजे वड बाल विरक्त होने पर भी राम रूप में निमग्न हो गये इस श्रीराम नाम के अर्थ से रमुक्कीऽःा धातु सार्थक होती है ।

सप्तदीपेषु ये सर्वे साधवोऽसाधवोऽपिवा ॥

विदेडकुल सम्भूता ये य सर्वे नृपोत्तमाः ॥ १० ॥

रामरुपाएविवि भूत्वा रमितास्तैनिजानिजा ।

दत्तात्मजो रमुक्कीऽःा रामस्यैव धति श्रुतिः ॥ ११ ॥

शिव जे कडते हैं कि डे पार्वती! सातों द्वीप में जितने साधु तथा असाधु राजा थे और विदेड कुल में उत्पन्न जितने नृपोत्तम वीर थे वो सब श्रीराम जे की शोभा सिन्धु में निमग्न होकर आनन्दित होकर अपनी अपनी कन्या श्रीराम जे को अर्पण कर दिजे उसलिये डी रमुक्कीऽःा धातु से श्रीराम की निष्पत्ति होती है औसी सनातनी श्रुति है ।

राक्षसी धोररुपा य दृष्टत्वां कर्तुमागता ।

साध्यासीद्रमिता रामे पतिवत्साममोहिता ॥ १२ ॥

धोर रुपा शूर्पाण्भा राक्षसी दृष्ट भाव की छच्छा से पञ्चवटी में आठ और जब उसने श्रीराम रूप को देखा तो वड मोहित हो गठ और श्रीराम जे के साथ पति भाव से रमण करना चाडा ।

यतुर्दश सडस्त्राश्च राक्षसा भरदूषणाः ।

मोहिता रामसद्रूपे रमुक्कीऽःातउच्यते ॥ १३ ॥

यौदह लज्ार राक्षसों के सडित भरदूषण भी श्रीरघुनाथ जे के सदरूप को देभकर मोहित हो गये उसलिये डी राम नाम से उत्पन्न रमुक्कीऽःा धातु कडी जाती है ।

नाना मुनि गणारस्सर्वे दण्डकारण्यवासिनः ।

ज्ञानयोग तपोनिष्ठा ज्ञापका ध्यान तत्पराः ॥ १४ ॥

मुनि वेष धरं रामं नीलजे भूत सन्निभम् ।

रमन्तेयोषितो भूता रूपं दृष्ट्वा मलर्षयः ॥ १५ ॥

दण्डकारण्य वासी नाना वेश विशिष्ट मुनि गण योग तप निष्ठ तथा जप ध्यान परायण होने पर भी जब सजल नील मेघ के समान मुनि लेश धाराण किजे लुजे श्रीराम रूप को देभकर अेकायेक मोहित होकर स्त्री भाव से श्रीराम जे में रमण करना चाडे ।

धृषध्दास कृतो रामोदृष्ट्वा तेषामिमागतिम् ।

युधन्धन्य तराज्ञाने संस्पर्शनडि साम्प्रति ॥ १६ ॥

उन मुनियों की औसी स्थिति देखकर रघुनाथजु कुछ डँसकर बोले कि हे ऋषि गए! आप सब ज्ञानियों में श्रेष्ठ गिने जाते हैं और मैं भी अवतारों में मर्यादा पुरुषोत्तम गिना जाता हूँ, इसलिये इस काल में मेरा स्पर्श नहीं हो सकता है ।

मन्निदेशात्तपोयूयं यरध्वं भो मडर्षयः ।

धृषितास्ते भविष्यन्ति द्वापरे वर्तते युगे ॥ १७ ॥

श्रीराम जु बोले - हे मडर्षियों! डमारी धृष्या से आप सब अभी तप करें द्वापर युग में धंस अभिलाषा की पूर्ति होगी ।

रमिताराम मूर्त्तौ ते स्त्रियोरुपास्तपश्चरन् ।

अतो देवि रमुकीडःा राम नामैववर्तते ॥ १८ ॥

शिव जु बोले - हे देवी ! जिस राममूर्ति में तप करते हुये भी ऋषि लोग स्त्री रूप भाव से रमण करना चाहें धसी निमित्त से कीडःार्थक रमु धातु राम नाम से निरूपित होता है ।

अजरा नरतनुं त्यक्त्वारामात्लुब्धां विलोक्य सः ।

रामधेव रमद्वाली रमुकीडःात उच्यते ॥ १९ ॥

वीर बालि राम जु से अजर अमर शरीर होने का वरदान पाने पर भी शरीर की आशा छोडःकर रघुनाथजु के चरण कमल में डी रमण किया धंस कारण से भी रमु कीडःा धातु राम नाम से निष्पन्न होती है ।

रमिता राम सद्रूपे राक्षसा रावणार्णवः ।

राम धत्याडवे उक्त्वा राममेवास्मि सडुगता ॥ २० ॥

रावण आदि राक्षस समूड रघुनाथजु के सद्रूप में रमण कर तथा समर में हे राम ! औसा सम्बोधन कर शरीर त्याग कर श्रीरामजु को प्राप्त हो गये ।

परे धाम्नि गते रामेडयोध्यायां ये चराचराः ।

रामेडपिरमिता भूत्वा तध्याडमुपजग्मतुः ॥ २१ ॥

जब रघुनाथजु अपने परधाम को जाने की धृष्या डिये उस समय श्रीअवधवासी तथा चराचर श्रीराम रूप में मग्न होकर उनके साथ गमन कर गये ।

रामनाम्नो विशेषेण रमुकीडःां भवत्यतः ।

डेतुरन्यद्रमुकीडःां शृणुध्वं सावधानतः ॥ २२ ॥

धसी कारण विशेष रूप से राम नाम से रमु कीडःा उत्पन्न होती है डिन्तु मैं रमु कीडःा के अपर डेतु को भी सुनाता हूँ ध्यान से सुनो ।

वाय्य वायड रामस्य डधितौ नाम रूषिणौ ।

राम नाम परं ब्रह्म रमितं यच्चरायरे ॥ २३ ॥

भगवान् शिव कहेते हैं कि श्रीराम पद में नाम और रूप की दृष्टि से वाचक वाच्य सम्बन्ध है अर्थात् श्रीराम नाम लेने पर रघुनाथजी का रूप ही ध्यान में आता है। यह राम नाम ही वह परब्रह्म है जो यरायर में रमए कर रहा है।

रमन्ते मुनयोयस्मिन् योगिनश्चोर्ध्वरेतसः ।

अतोदिवि रमुक्रीडःा रामनामैववर्तते ॥ २४ ॥

जिन श्रीराम में मुनि समूह तथा उर्ध्वरेता नैष्टिक ब्रह्मचारी रमए कर रहे हैं इसलिये ही श्रीराम नाम से रमुक्रीडःा धातु निष्पन्न होती है।

पोषणं भरणार्थाय रामनाम्नाजगत्सु य ।

अतश्चेव रमुक्रीडःा परब्रह्माभिधीयते ॥ २५ ॥

समस्त जगत का आधार तथा भरण पोषण करने वाला यह श्रीराम नाम ही है इसलिये इस रमुक्रीडःा धातु से परब्रह्म का अभिधान होता है।

अंशांशैरामनाम्नश्च त्रयः सिद्धाभवन्तिहि ।

बीजमोङ्कार सोलं य सूत्रैरुक्तमितिश्रुतिः ॥ २६ ॥

श्रीराम नाम के अंश अर्थात् रेङ्गादि कला से ही बीज, ओङ्कार तथा सोलं यह तीन सिद्ध होते हैं। यह बात श्रुति (वेद)और सूत्र (पाणिनीय)में उक्त अर्थात् प्रसिद्ध है।

कथमेतद्विजानामि संसिद्धा रामनामतः ।

बीजमोङ्कारसोलं य स्वामिन् कथयतत्त्वतः ॥ २७ ॥

माता पार्वती शिव जी से बोलीं - यह मैं कैसे जानूँ कि श्रीराम नाम से प्रणव और बीज तथा सोलं ये तीन सिद्ध होते हैं इसलिये हे स्वामिन्! मुझे तत्त्व रूप से बताइये।

निश्चलं मानसं कृत्वा सावधानाच्छृणु प्रिये ।

गुड्याद्गुड्यतरं तत्त्वं वक्ष्येऽमृतमयं मुदा ॥ २८ ॥

भगवान् शिव माता पार्वती जी से बोले - हे प्रिये! तुम अपने मन को स्थिर करके मेरी बात को सावधानपूर्वक सुनो। मैं बःसे उर्ष से तुमसे इस अमृत रूप गूढःतम तत्त्व को कहेता हूँ।

राम नाम मडाविधाषड्भिर्वस्तुभिरावृता ।

ब्रह्मज्जुव मडानादैस्त्रिभिरन्यद्ददामिते ॥ २९ ॥

भगवान् शिव बोले कि यह श्रीराम नाम रूपी मडाविधा छः वस्तुओं से आवृत है - ब्रह्म, जुव, मडानाद और इसके अतिरिक्त अन्य वस्तु का भी मैं वर्णन करता हूँ।

स्वरेण विन्दुना यैव दिव्यया माययापि य ।

पृथक्त्वेन विभक्तेन साम्प्रतं शृणुपार्वति ॥ ३० ॥

पुनः तीन वस्तु स्वर, बिन्दु तथा द्रिय माया यल छल वस्तु श्रीराम नाम में है । डे पार्वती ! अब ँन छः वस्तुओं डे पृथक डेड मैं तुडसे कलता डूअँ तुड ध्यान से सुनो ।

परब्रह्म डयोरेडो ञुवोडकारश्च डस्य यः ।

रस्याकार डयोनाडः रायादीर्घस्वरस्मृतः ॥ ३१ ॥

राम नाम में ञो रेडू है वल परब्रह्मडमय है (वाच्य-वाचक सम्बन्ध से)और डकार का ञो अकार है वल ञुव स्वरुप है और रकार डे डूस्व अकार नाड स्वरुप है डूरि दीर्घ अकार स्वर स्वरुप है ।

डकारं व्यञ्जनं डिन्दुर्लुतु ड्राणवडाययोः ।

अर्धं ड्ढागाडुकारस्याडकारान्नाडड्ढागिनः ॥ ३२ ॥

रकारं गुरुराकारस्तथा वर्णविपर्ययः ।

डकारं व्यञ्जनं शैव ड्राणवं याडिधीयते ॥ ३३ ॥

डकार ञो व्यञ्जन है वल डिन्दु स्वरुप है । ड्राणव का डेतु माया अर्थात ड्राणव द्रिय माया स्वरुप है । वर्ण विपर्यय सूत्र से रकार ञो है वल अकार डो ञाता है और ञो राम का अकार है वल डकार डो ञाता है और ञो डकार है वल डकार डी रडकर ड्राणव का अडिधान कर डेता है ।

रामनाड्नः समुत्पन्नः ड्राणवो डोक्षडायकः ।

रुपन्तत्त्वडसेश्चासौ वेडतत्त्वाडिकाडिणः ॥ ३ॡ ॥

राम नाम से डी डोक्षडायक ड्राणव समुत्पन्न डुआ है और वेड तत्त्व डे अधिकारी वोग ँसी राम नाम डो तत्त्वडसि का रुप अर्थात कारण कलते है ।

अकारः ड्राणवेसत्त्वडुकारश्च रञोगुणः ।

तडोडल डकारः स्यात्त्रयोडलङ्कार डडूडवाः ॥ ३५ ॥

अब श्रीराम नामकार्थ ड्राणव डे तीनों वर्णों डो त्रिगुणडय डिड्ढाते है । ड्रकृति का कार्य डलतत्त्व त्रिविध अडङ्कार डय है वडी ड्राणव का डथड वर्ण अकार सत्त्वगुणडय है और ड्वितीय वर्ण डकार रञोगुणडय है तथा तीसरल डल डकार ञो है वल तडोगुणडय है । ञैसे डलतत्त्व से डी त्रिगुण डत्पन्न डोते है डसी डकार श्रीराम नाम से डडूडूत ड्राणव डे तीनों वर्ण त्रिगुणडय है ।

ड्रिये डगवतो रुडे त्रिविधो ञायतेडपि यः ।

विषणुर्विधिर्डरश्चैव त्रयो गुण विधाडिणः ॥ ३ॢ ॥

डगवान शिव डोले डि डे ड्रिये! षडैश्वर्य सम्पन्न डगवान श्रीरामञु से त्रिविध रुप ञायडान (ड्रकट)डोते है - ब्रह्मा ञो रञोगुणडय है, विषणु ञो सत्त्वगुणडय है तथा शिवञु ञो तडोगुणडय है ।

यरायर समुत्पन्नो गुणत्रय विडगतः ।

अतः ड्रिये रडुकीडःा रामनाड्नैव वर्तते ॥ ३५ ॥

यराय्यर जगत धर्नी गुणत्रय (सत-रज-तम)धर्नी के विभाग से सम्यक् रूप से उत्पन्न होता है इसलिये रमु  
कीडःा धातु राम नाम से ही निष्पन्न होती है ।

यथा य प्रणवोऽज्ञेयो बीजं तद्दर्शं सम्भवम् ।

सशब्देन उकारेण सोऽहमुक्तं तथैव य ॥ ३८ ॥

जैसे प्रणव राम नाम से सिद्ध होता है और राम वर्ण अन्य बीज सिद्ध होता है उसी प्रकार सकार और उकार  
सहित सोऽह मन्त्र भी राम नाम से ही सिद्ध होता है ।

धत्याध्यो मडामन्त्रा वर्तन्ते सप्तकोटयः ।

आत्मा तेषां य सर्वेषां राम नाम प्रकाशकः ॥ ३९ ॥

प्रणवादि सात करोडः मडामन्त्र जो कडे गये हैं उन सबका आत्मा स्वरूप अर्थात् प्रकाशक श्रीराम नाम ही है ।

नारायणादि नामानि कीर्तितानि बहून्यपि ।

सम्यग्भगवत्स्तेषु रामनाम प्रकाशकः ॥ ४० ॥

नारायणादि जितने भगवन्नाम हैं वे बहुत से शास्त्रों में गाये गये हैं किन्तु उन सम्पूर्ण नामों के सत्य प्रकाशक  
(परम स्त्रोत)श्रीराम नाम ही हैं ।

अतः प्रिये रमुकीडःा तेषामर्थप्रवर्तते ।

सनकादि इण्णीशादि रामनाम भजन्त्यतः ॥ ४१ ॥

भगवान् शिव कडते हैं कि हे प्रिये! उन नारायणादि शब्दार्थ में रमु कीडःा धातु का प्रवर्तन होता है इसलिये  
ही सनकादिक ऋषिगण और शेष प्रभृति मडानुभाव इस राम नाम को भजते हैं ।

रामनाम्नोगुणैश्चर्यं सङ्क्षेपेन प्रभाषितम् ।

रूपमेतत् प्रतापं य रामनाम्नोवदामिते ॥ ४२ ॥

भगवान् शङ्कर बोले कि श्रीराम नाम के गुण और अश्चर्य को मैंने सङ्क्षेप में तुमसे कडा, अब मैं तुमसे श्रीराम नाम  
के रूप और प्रताप के विषय में कडता हूँ ।

शृणुष्व परमं गुड्यं यं न जानन्ति केपि य ।

केपि केपि विजानन्ति रामानुङ्कोशतः प्रिये ॥ १३ ॥

भगवान् शिव कडते हैं कि इस परम गोप्य तत्त्व को कोई नहीं जानता । केवल कोई-कोई ही इस परम गुड्य तत्त्व  
को श्रीराम जो के अनुग्रह से जानते हैं ।

तेजोरूपमयोरेकः श्रीरामाम्बक इज्जयोः ।

कोटि सूर्य प्रकाशश्च परब्रह्म स उच्यते ॥ ४३ ॥

श्री रघुनाथ जो के नेत्र कमल का तेज रूप रेक ही करोडःों करोडःों सूर्यों को प्रकाशित करता है इसलिये वड  
रेक ही परब्रह्म कडाता है ।



सोऽपि सर्वेषु भूतेषु सडस्त्रारे प्रतिष्ठितः ।

सर्वसाक्षी जगद्व्यापी नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ॥ ४४ ॥

वड तेज सभी प्राणी मान्त्रे सडस्त्रार (सिर मध्य के अग्र भाग में सडस्त्रदल कमल)में प्रतिष्ठित है और सर्वसाक्षी तथा जगत में व्याप्त है उसी तेज का योगिजन नित्य ध्यान करते हैं ।

रामस्य मण्डलस्यैव तेजोऽप्यं वरानने ।

कोटिकन्दर्पशोभाढ्यो रेङ्गाकारोऽखिविद्धि य ॥ ४५ ॥

भगवान् शिव बोले कि हे वरानने! रघुनाथजी के मुखमण्डल का जो तेज रूप प्रकाश है वड करोऽों कामदेवों की शोभा से युक्त है उसे तुम रेङ्ग का रूप अकार जानो ।

अकारस्यतद्रूपं य वासुदेवः स कथ्यते ।

मध्याकारो मडातेजः श्रीरामस्यैव वक्षसः ॥ ४६ ॥

और रूप अकार का वड रूप वासुदेव पद से कडा जाता है फिर श्रीरामजी के वक्षस्थल का जो मडातेज है वड राम शब्द के मध्यवर्ती दीर्घ अकार को धोतित करता है ।

सोऽप्याकारो मडाविष्णोर्बलवीर्यं स्वरूपकम् ।

सर्वेषामेवविश्वानामाधारत्वं य विद्धितम् ॥ ४७ ॥

वड अकार बल और वीर्य के स्वरूप मडाविष्णु का वायक है। यही अकार सम्पूर्णा जगत का आधार है ।

मस्याकारो भवेद्रूपं श्रीराम कटिजानुनी ।

सोऽप्याकारो मडाशम्भुरुच्यते यो जगद्गुरुः ॥ ४८ ॥

और मकार में जो अकार है वड श्रीरामजी के कमर और घुटने का तेज है और यही अकार मडाशम्भु कडलाते हैं जो जगद्गुरु हैं ।

धृष्ट्याभूतं य रामस्य मकारव्यञ्जनञ्चयत् ।

तन्मूल प्रकृतिर्ज्ञेया मडमायास्वरूपिणी ॥ ४९ ॥

श्रीराम नाम में जो व्यञ्जन मकार है वड रघुनाथजी की धृष्ट्या का स्वरूप है और उसी को मडमायास्वरूपिणी मूल प्रकृति जानना चाडिअे ।

भाषितेयं रमुङ्गीऽा गुड्याद्गुड्यतरापरा ।

अन्यं प्रकारं वक्ष्ये य त्वत्तोऽलं यारुलोचने ॥ ५० ॥

भगवान् शङ्कर बोले - हे यारुलोचने ! यड गोप्य से गोप्यतर रमुङ्गीऽा धातु की व्याख्या मैंने तुमसे की अब तुमसे राम नाम के अन्य प्रकार के अर्थों का वर्णन करता हूँ ।

नारायणो रकारःस्यादकारोनिर्गुणात्मकः ।

मकारोभक्तिरूपः स्यान्मडाढ्वाढ्वाभिधायिनि ॥ ५१ ॥

राम शब्द में जो रकार है वह नारायण रूप का अभिधान करती है और मध्यवर्ती आकार निर्गुण ब्रह्मेक स्वरूप का धोतन करता है और मकार मडाह्लादधायिनी भक्ति का अभिधान करता है ।

विज्ञानस्थोरकारः स्यादकारो ज्ञानरूपकः ।

मकारः परमात्मन्ती रमुक्तीऽप्यते ततः ॥ ५२ ॥

राम नाम का जो रकार है वह राम जो के विशुद्ध विज्ञान स्वरूप है। अकार श्रीरामजो के ज्ञान का स्वरूप है। मकार राम जो परम भक्ति का स्वरूप है। इसलिये ही राम नाम से कीर्त्तार्थक रं धातु निष्पन्न होती है ।

त्रिद्वयकोरकारः स्यात्सद्वाच्योऽकारोऽप्यते ।

मकारानन्दकंवाच्यं सख्यिदानन्दमव्ययम् ॥ ५३ ॥

श्रीराम नाम का रकार त्रिद्वयक है और अकार जो है वह सद्वाच्यक है और मकार आनन्द वाच्यक है इसलिये श्रीराम नाम तीनों कालों में अभाषित रूप से सख्यिदानन्द ब्रह्म रूप है ।

रकारस्तत्पदोऽज्ञयस्त्वं पदोऽकारोऽप्यते ।

मकारोऽसि पदंज्ञेयं तत्त्वमसि सुलोचने ॥ ५४ ॥

भगवान् शिव बोले कि हे सुलोचने! वेद में जो मडावाच्य “तत्त्वमसि” है वह भी श्रीराम नाम के वार्त्तो से गतार्थ है। रकार से तत्पद का ज्ञान होता है। अकार से त्वं पद का ज्ञान होता है और मकार से असि पद का ज्ञान होता है ।

ब्रह्मेति तत्पदं विद्धि त्वम्पदोऽज्ञवनिर्मलः ।

ध्वरोऽसि पदं प्रोक्तस्ततो माया प्रवर्तते ॥ ५५ ॥

तत्त्वमसि मडावाच्य में जो तत्पद है वह ब्रह्म श्रीरामजो का वाच्यक है और त्वम्पद निर्मल जो का बोधक है और फिर असि पद द्वारा ध्वर का बोध होता है उसी ध्वर से माया अर्थात् प्रकृति का प्रवर्तन होता है ।

वेदसारं मडावाच्यं तत्त्वमसितत्त्वथते ।

रामनाम्नश्च तत्सर्वं रमुक्तीऽप्रवर्तते ॥ ५६ ॥

मडावाच्य जो तत्त्वमसि है वह वेद का सार भाग कलवाता है और वह मडावाच्य राम नाम में ही गतार्थ है इसलिये राम नाम से ही रमुक्तीऽा धातु का प्रवर्तन होता है ।

अन्यप्रकारं त्वत्तोभक्त्या शृणु वदाम्यहम् ।

सङ्क्षेपेनैव यद्भेदं क्षराक्षरनिरक्षरैः ॥ ५७ ॥

भगवान् शिव बोले कि क्षर अक्षर निरक्षर द्वारा अन्य प्रकार के जो भेद हैं वह सङ्क्षेप में तुमसे मैं कलता हूँ मैं भक्ति पूर्वक तुम उसे सुनो ।

व्यञ्जनाव्यक्षरोत्पत्ती रकाराद्ब्रह्मयाक्षरः ।

रेहो निरक्षरो ब्रह्म सर्वव्यापी निरञ्जनः ॥ ५८ ॥

व्यञ्जन वार्त्ता से अर्थात् डल मकार से क्षर की उत्पत्ति होती है और अकार से अक्षर ब्रह्म प्रकाश करते हैं और रेकू से निरक्षर ब्रह्म जो सर्वव्यापी हैं और निरञ्जन हैं वे उत्पन्न होते हैं ।

क्षरोऽभिधीयते माया ब्रह्मात्मनातु याक्षरः ।

परमात्मा परब्रह्म निरक्षर एतस्मृतः ॥ ५८ ॥

क्षर पद से माया का अभिधान होता है और अक्षर पद से आत्मा ब्रह्म अर्थात् अणुयेतन समूह का ज्ञान होता है और निरक्षर पद से परब्रह्म परमात्मा की निष्पत्ति होती है श ।

सकला व्यापिनो नित्यं क्षराक्षरनिरक्षराः ।

रामनाम्नो रमुक्तीडा प्रवीणोऽतः समुच्यते ॥ ६० ॥

क्षर अक्षर निरक्षर अर्थात् चित् अचित् और धन्धर यही तीनों पद ब्रह्माण्ड में नित्य व्याप्त रहते हैं । भगवान् शिव कहते हैं कि हे प्रवीणो! इसलिये ही राम नाम से रमुक्तीडा धातु कही जाती है ।

रामनामगुणास्त्वत्तो भाषिताद्विसूक्ष्मतः ।

रामनाम प्रतापञ्च साम्प्रतं सूक्ष्मतः शृणु ॥ ६१ ॥

भगवान् शिव बोले कि हे देवी! तुमसे राम नाम के सूक्ष्म गुणों को मैंने कदा अब इस काल में श्रीराम नाम के प्रताप को सूक्ष्मता से मैं वर्णन करता हूँ ।

रकारोऽनलवीजंस्याद्यैसर्वे वऽवाद्यः ।

कृत्वामनोमलंसर्वं भस्मकर्म शुभाशुभम् ॥ ६२ ॥

वऽवाग्निं जठराग्निं आदि जितनी अग्नि जगत में है सबका कारण रेकू ही है अग्नि बीज जो रेकू है उसका जप मनोमल को जला कर शुभाशुभ कर्म को भी भस्मीभूत कर देता है ।

अकारोऽभानुबीजंस्याद्देवशास्त्रं प्रकाशकम् ।

नाशयत्येव सद्दीप्त्या याविद्या दृष्टये तमः ॥ ६३ ॥

वेद शास्त्र प्रकाशक भानु अर्थात् सूर्य के बीज अकार हैं और वल अकार अपनी सत् दीप्ति के प्रकाश द्वारा जन मन के अविद्या रूप तमस का नाश करता है ।

मकारं यन्द्रबीजं य सद्यम्बुपरिपूरणम् ।

त्रितापं हरते नित्यं शीतलत्वं करोति य ॥ ६४ ॥

सद्यम्बु परिपूरित यन्द्र बीज मकार त्रिविध ताप अर्थात् आधिदैविक आधिभौतिक आध्यात्मिक ताप को दूर कर शीतल करता है अर्थात् ऋषि के स्वरूप गत जो गुणाष्टक है उसको प्रकट करता है ।

रकारो लेतु वैराग्यं परमं यच्च कथ्यते ।

अकारो ज्ञानलेतुश्च मकारो भक्तिं लेतुकः ॥ ६५ ॥

त्रिगुण सिद्धि पर्यन्त जो त्याग है उसे पर वैराग्य कहते हैं उसका कारण श्रीराम शब्द गतार्थ जो रेकू है वल है और समस्त ज्ञान का लेतु अकार है और भक्ति का कारण मकार को जानना चाहिये ।

અતો દેવિ રમુકીડા રામનામ્નઃ સમુચ્યતે ।

સમ્યક્ શૃણુ પ્રવીણેત્વં હેતુમન્યદ્વદામિતે ॥ ૬૬ ॥

ઇસલિએ હે દેવિ! રામ નામ સે હી સમ્યક રૂપ સે રમુ કીડાઃ ા ધાતુ કહી ગઈ હૈ। હે પ્રવીણે! અબ સમ્યક રૂપ સે જો મૈં અન્ય હેતુ કહતા હૂઆં વહ સુનો ।

વેદે વ્યાકરણે ચૈવ યે વર્ણસ્વરાસ્મૃતાઃ ।

રામનામ્નૈવ તે જાતાઃ સર્વે વૈ નાત્ર શંસયઃ ॥ ૬૭ ॥

ભગવાન શિવ અપર હેતુ બતાતે હૈં કિ સમસ્ત વેદ તથા વ્યાકરણ મેં હકારાદિક વ્યજ્જન વર્ણાં ઔર અકારાદિક સ્વર સમુદાય જો કહા હૈ વે સભી શ્રીરામ નામ સે હી જાયમાન (પ્રકટ)હૈં ઇસમેં કોઈ સંશય નહીં હૈ ।

રકારો મૂર્ધ્નિ સગ્ચારસ્ત્રિકૂટયાકાર ઉચ્યતે ।

મકારોઽધરયોર્મધ્યે લોમે લોમે પ્રતિષ્ઠિતઃ ॥ ૬૮ ॥

રકાર જો હૈ વહ મૂર્ધા મેં સગ્ચાર કરતા હૈ ઔર અકાર ત્રિકુટિ સગ્ચારક કહા ગયા હૈ ફિર મકાર દોનોં ઓછ કે મધ્ય સગ્ચારક કહા ગયા હૈ ઇસલિએ યહ વર્ણત્રય સમુદાય રોમ રોમ મેં પ્રતિષ્ઠિત હૈં ।

રકારોયોગિનાન્ધ્યેયો ગચ્છન્તિ પરમં પદમ્ ।

અકારો જ્ઞાનિનાં ધ્યેયસ્તે સર્વે મોક્ષરૂપિણઃ ॥ ૬૯ ॥

શ્રીરામ શબ્દ ગત જો રેફ હૈ વહ યોગિયોં કા ધ્યેય અર્થાત ધ્યાન કા લક્ષ્ય હૈ જિસ લક્ષ્ય મેં મન કો એકાગ્ર કર કે પરમ પદ અર્થાત શ્રીસાકેત ધામ કો યોગિજન જાતે હૈં ઔર આકાર ધ્યેય જ્ઞાનિયોં કા હૈ જિસ ધ્યેય કે પ્રભાવ સે વે સભી જ્ઞાની મોક્ષ સ્વરૂપ હોતે હૈં અર્થાત જીવન મુક્ત કહલાતે હૈં ।

પૂર્ણ નામ મુદા દાસા ધ્યાયન્ત્યયલ માનસા ।

પ્રાપ્સુવન્તિ પરામ્ભક્તિ શ્રીરામસ્ય સમીપતામ્ ॥

દાસ્ય રસ નિષ્ઠ મહાત્મા વૃન્દ આનન્દ કે સહિત અચલ મન સે પૂર્ણ રામ નામ કા ધ્યાન કરતે હૈં ઇસલિએ ઉન દાસ્ય ભાવ નિષ્ઠોં કો શ્રીરામ જી કી સામીપ્ય પરામ્ભક્તિ પ્રાપ્ત હોતી હૈ ।

અન્તર્જપન્તિ યે નામ જીવન્મુક્તા ભવન્તિતે ।

તેષાં ન જાયતે ભક્તિર્ન ચ રામ સમીપકઃ ॥ ૭૧ ॥

વૈખરી પરા પશ્યન્તી આદિ કિસી વાણી કા અવલમ્બ ન લેકર અન્તર નિષ્ઠ હોકર જો નામ જપતે હૈં સો જીવન મુક્તિ કો પ્રાપ્ત હોતે હૈં કિન્તુ ઉનકો રામસમીપકારિણી ભક્તિ નહીં મિલતી હૈ ।

જિહ્વાપ્યન્તરેણૈવ રામનામ જપન્તિ યે ।

તેષાં ચૈવ પરામ્ભક્તિર્નિત્યં રામ સમીપકા ॥ ૭૨ ॥

અન્તઃ કરણ ઔર જિહ્વા દોનોં સે જો રામ નામ કા જાપ કરતે હૈં ઉન્હેં શ્રીરામ જી કી સામીપ્યકારિણી નિત્યપરામ્ભક્તિ પ્રાપ્ત હોતી હૈ ।

योगिनो ज्ञानिनो भक्ताः सुकर्म निरताश्च ये ।

रामनाम्नि रताः सर्वे रमुक्तीडात येव वै ॥ ७३ ॥

योगी, ज्ञानी, भक्त और कर्मकाण्ड में जो निरत हैं ये यारों प्रकार के साधक श्रीराम नाम में रत रहते हैं इसलिये रमुक्तीडात धातु राम नाम से निष्पन्न है ।

शृणुष्व मुप्य नामानि वक्ष्ये भगवतः प्रिये ।

विष्णुर्नारायणः कृष्णो वासुदेवो हरिः स्मृतः ॥ ७४ ॥

भगवान् शिव बोले - हे प्रिये ! भगवान् के जो कुछ मुप्य नाम हैं वे हैं विष्णु नारायण कृष्ण वासुदेव और हरि ।

ब्रह्मविश्वम्भरोऽनन्तो विश्वरूपः कलानिधिः ।

कल्मषघ्नो दयामूर्तिः सर्वगः सर्वसेवितः ॥ ७५ ॥

ब्रह्म, विश्वम्भर, अनन्त, विश्वरूप, कलानिधि, कल्मषघ्न, दयामूर्ति, सर्वग और सर्वसेवित इत्यादि भगवान् के मुप्य नाम हैं ।

परमेश्वर नामानि सन्त्यनेकानि पार्वति ।

अेकादिकं मडास्वच्छं मुय्याराणान्मोक्षदायकम् ॥ ७६ ॥

भगवान् शिव कहते हैं कि हे पार्वती ! परमेश्वर पद वाच्य रघुनाथज के गुण को दर्शाने वाले अनेकों नाम हैं अर्थात् असङ्ख्य नाम हैं और सभी अेक से अेक, परम निर्मल और उच्यारण करने पर मोक्ष को प्रदान करने वाले हैं ।

नाम्नामेव य सर्वेषां रामनाम प्रकाशकः ।

त्राडाणां य यथा भानुर्नक्षत्रानां यथाशशी ॥ ७७ ॥

नारायण कृष्णादिक निम्बिल नाम समूहों के परम प्रकाशक श्रीराम नाम उसी प्रकार हैं जैसे मङ्गलादिक त्रहों के प्रकाशक सूर्य भगवान् हैं और जैसे नक्षत्रों के प्रकाशक चन्द्रमा हैं ।

निर्जराणां यथा शङ्को नराणां भूपतिर्यथा ।

यथा लोकेषु गोलोकः सरयूनिम्नगासु य ॥ ७८ ॥

भगवान् शिव जो राम नाम को सभी नामों से अधिक अनेक उपमाओं द्वारा दिभाते हैं। जैसे सभी देवों में चन्द्र हैं और नरों के मध्य में शङ्कवर्ती हैं और अभिल लोकों के मध्य गोलोकस्थ साकेत है और जैसे नदियों के मध्य श्रीसरयू जो है ।

कवीनां य यथानन्तो भक्तानामञ्जनीसुतः ।

शक्तीनां यथा सीता रामोभगवतामपि ॥ ७९ ॥

श्री राम नाम सभी नामों में कैसे श्रेष्ठ है? जैसे सभी कवियों में भगवान् शेष हैं और भक्तों में श्रीहनुमान् जो श्रेष्ठ हैं, शक्तियों में जैसे श्रीजनक डिशोरीज श्रेष्ठ हैं और सभी अवतारों के मध्य जैसे श्रीराम श्रेष्ठ हैं ।

भूधराणां यथा मेरुः सरसां सागरो यथा ।

कामधेनुर्गवाम्मध्ये धन्विनां मन्मथो यथा ॥ ८० ॥

जैसे पर्वतों के मध्य सुमेरु पर्वत श्रेष्ठ है और सरोतों के मध्य में सागर श्रेष्ठ है और गावों के मध्य कामधेनु श्रेष्ठ है, और धनुष धारियों के मध्य जैसे कामदेव श्रेष्ठ है उसी प्रकार सभी भगवन्नामों के मध्य श्रीरामनाम श्रेष्ठ है ।

पक्षिणां वैनतेयश्च तीर्थानां पुष्करो यथा ।

अलिंसा सर्व धर्मानां साधुत्वेऽपि दया यथा ॥ ८१ ॥

पक्षियों के मध्य जैसे वैनतेय गरुडः श्रेष्ठ है और तीर्थों के मध्य जैसे पुष्करराज श्रेष्ठ है और सब धर्मों के मध्य जैसे अलिंसा श्रेष्ठ है और साधुता के लक्षण में सबसे श्रेष्ठ जैसे दया है ।

मेघनी क्षमिनां मध्ये मणीनां कौस्तुभो यथा ।

धनुषां वै यथा शार्ङ्गः भृङ्गानां नन्दको यथा ॥ ८२ ॥

क्षमा करने में जैसे भूमि श्रेष्ठ और मणियों में जैसे कौस्तुभ मणि श्रेष्ठ है, धनुषों में जैसे शारङ्ग धनुष श्रेष्ठ है और भृङ्गों में जैसे नन्दक तलवार श्रेष्ठ है उसी प्रकार सब नामों में श्री राम नाम श्रेष्ठ है ।

ज्ञानानां ब्रह्मज्ञानञ्च भक्त्यानां प्रेमलक्षणा ।

प्राणवः सर्वमन्त्राणां रुद्रानामहमेव च ॥ ८३ ॥

समस्त ज्ञानों में ब्रह्मज्ञान श्रेष्ठ है और भक्ति में जैसे प्रेमाभक्ति श्रेष्ठ है, मन्त्र समूह में जैसे प्राणव श्रेष्ठ है और जैसे सभी रुद्रों में मैं श्रेष्ठ हूँ वैसे ही श्रीराम नाम सभी नामों में श्रेष्ठ है ।

कल्पद्रुमश्च वृक्षाणां यथा योध्यापुरीषु च ।

कर्मणां भगवत्कर्म अकारश्च स्वरेष्वपि ॥ ८४ ॥

जैसे सभी वृक्षों में कल्प वृक्ष श्रेष्ठ है और पुरियों के मध्य जैसे अयोध्या श्रेष्ठ है उसी प्रकार सभी कर्मों में भगवत्सम्बन्धी कर्म श्रेष्ठ हैं और सभी स्वर संज्ञक वर्णों में जैसे अकार श्रेष्ठ है उसी प्रकार सभी नामों में श्रेष्ठ श्रीराम नाम है ।

किमत्र बहुनोक्तेन सम्यग्भगवतः प्रिये ।

नाम्नामेव सर्वेषां रामनाम परम्भङ्गत् ॥ ८५ ॥

भगवान् शिव श्रेष्ठ बोले - हे प्रिये! यहाँ पर बहुत कलने से क्या श? तुम यह अच्छी प्रकार जान लो कि सभी भगवान् के नामों में परम श्रेष्ठ यह श्रीराम नाम ही है ।

शब्दानां चैव सर्वेषां रामशब्दः परोमहान् ।

एतं त्वया कथं प्रोक्तं मे तदर्थं वद प्रभो ॥ ८६ ॥

माता पार्वती बोलीं कि हे प्रभो! सम्पूर्ण शब्दों में श्रीराम शब्द ही परम श्रेष्ठ है यह आप कैसे कहे इसविषये आप बाकी नामों के अर्थ को भी मुझसे कडिसे ताडि मैं श्री राम नाम को पर जान सङ्घुँ

नाम्नामर्थमहन्तेवि सङ्क्षेपेन वदामिते ।

शब्दा भगवतोऽनेका गुणार्था कोटिकोटयः ॥ ८७ ॥

भगवान् शिव बोले कि हे देवि! अपर नामों के अर्थ को मैं सङ्केप से कडता हूँ तुम उसको सुनो। रघुनाथञ्चु के जो कडोऽों कडोऽों नाम हैं वे सब गुणों के विधायक हैं ।

नारास्वप्सु गृहं यस्य तेन नारायणः स्मृतः ।

शुवनाराश्रयोयोऽस्ति तेन नारायणोऽपि य ॥ ८८ ॥

अब भगवान् शिव रघुनाथ ञ्चु के गुण दर्शक नारायण नाम का अर्थ कडते हैं कि नर पद वाच्य सनातन द्विभुज परमात्मा जो है उससे नार अर्थात् जल की उत्पत्ति होती है उसी जल में जिसका अयन है उसी को नारायण कडते हैं अर्थात् नार रुपी ञ्चुव समूह के जो आश्रय हैं वे ही नारायण पद वाच्य हैं ।

सर्वे वसन्ति वैयस्मिन्सर्वस्मिन् वसतेऽपिवा ।

तमाहुर्वासुदेवञ्च योगिनस्तत्त्वदर्शिनः ॥ ८९ ॥

वासुदेव शब्द का अर्थ यल है कि जिसमें सम्पूर्णा विश्व निवास करे अथवा सम्पूर्णा विश्व में जो वास करे उसको तत्त्वदर्शी योगी जन वासुदेव शब्द वाच्य तत्त्व बताते हैं ।

व्यापकोऽपिडियोनित्यं सर्वस्मिञ्च यरायरे ।

विष प्रवेशने धातोर्विष्णुरित्यभिधीयते ॥ ९० ॥

जो सम्पूर्णा यरायरे अर्थात् जडः येतनात्मक संसार में नित्य ही व्यापक हो उसे विष्णु कडते हैं। षसलिये जो सर्व जगत में प्रविष्ट हो उसके लिये ही विष प्रवेशने धातु से विष्णु शब्द का अभिधान होता है ।

कृषिर्भूवायकश्चैवाणश्च निर्वृति वायकः ।

तयोरैका मडाविद्ये कृषण्ठत्यभिधीयते ॥ ९१ ॥

हे मडाविद्ये ! कृषण् शब्द में कृष पद भूवायक अर्थात् सत्ता वायक है और ण् यल पद आनन्द वायक है यल दोनों पद मिलने से कृषण् शब्द निष्पन्न होता है और सत्ता सम्पादक यल बोध होता है ।

कथ्यते सडरिर्नित्यं भक्तनाड्कवेश नाशनः ।

भरणं पोषणं चैव विश्वम्भर इति स्मृतः ॥ ९२ ॥

जो भक्तों के क्वेश का नाश कर देते हैं उन्हें ही डरि कडा जाता है और जो समस्त विश्व का भरण पोषण करते हैं उन्हें विश्वम्भर कडा जाता है ।

वायुवद्गगनेपूर्णे जगतांङि प्रवर्तते ।

सर्वं पूर्णं निराकारं निर्गुणं ब्रह्म उच्यते ॥ ९३ ॥

जो आकाशवत रुप से गगन में अभाण्ड रुप से प्रवर्तित होकर भी पूर्ण और निराकार है उसी को निर्गुण ब्रह्म कडते हैं ।

यस्थानन्तानि रुपाणि यस्य यान्तं न विद्यते ।

श्रुतयो यं न जानन्ति सोप्यनन्तोऽभिधीयते ॥ ९४ ॥

जिसके रुप गुण अनन्त हों और जिससे श्रुति भी साङ्गोपाङ्ग न जान सके उसे अनन्त कडा जाता है ।

यो विराटस्तनुर्नित्यं विश्वरूपमथोच्यते ।

कलावैधिष्ठिता सर्वा यस्मिन्निति कलानिधिः ॥ ८५ ॥

यह सम्पूर्णा विराट जगत नित्य रूप से जिनका शरीर है उनमें विश्वरूप कलते हैं और सम्पूर्णा कलाओं के जो स्वामी हैं उनमें ही कलानिधि कलते हैं ।

सर्वाणि यैव नामानि मयाप्रोक्तानि यानि य ।

सख्यिदानन्दरूपानि नामान्येतानि सर्वसः ॥ ८६ ॥

भगवान शिव बोले कि हे गिरिजे! ये जितने नाम मैंने तुमसे वर्णन किये हैं वे सभी सख्यिदानन्द स्वरूप हैं ।

परन्तु नाम भेदाच्च सङ्क्षेपे न वदामिते ।

सख्यिदानन्दरूपैश्च त्रिभिरेभिः पृथक् पृथक् ॥ ८७ ॥

परन्तु सत यित आनन्द यह तीनों भागों को पृथक्-पृथक् कडकर सङ्क्षेप में वर्णन करता हूँ ।

वर्तते राम नामेदं पूर्णान्तत्वं त्रयात्मकम् ।

नामान्येतान्यनेकानि मयोक्तानि य पार्वति ॥ ८८ ॥

भगवान शिव कलते हैं कि हे पार्वती! राम नाम सदा ही सत, यित और आनन्द इन तीनों तत्त्वों से परिपूर्ण रहता है और राम नाम से भिन्न भगवद्वाच्यक अनेकों नाम जो मैंने तुमसे वर्णन किया है उनका भेद सुनो ।

कस्मिञ्चिन्मुप्य आनन्दः सत्यञ्च गौणमुच्यते ।

कस्मिञ्चित्सन्मुप्यं य गौणं यानन्दमुच्यते ॥ ८९ ॥

श्रीराम नाम से अलग जो अन्य नाम हैं उनमें किसी नाम में आनन्द मुख्य है तो सत्य गौण है और किसी में सत्य मुख्य है तो आनन्द गौण है ।

नामभेदं वदाम्यन्यं प्रवीणो शृणु भक्तितः ।

अन्यानि यानि सर्वाणि नामानि साक्षराणि य ॥ ९० ॥

भगवान शङ्कर बोले कि हे प्रवीणो! अन्य नामों का श्रीराम नाम से अके और भेद मैं तुम्हें बताता हूँ उसे भक्तिपूर्वक सुनो । श्रीराम नाम से भिन्न जितने भी अन्य नाम हैं वे सभी साक्षर अर्थात् वर्णात्मक हैं ।

निर्वर्णं रामनामेदं केवलं य स्वराधिपम् ।

मुकुटः क्षत्रं सर्वेषां मकारो रेकं व्यञ्जनम् ॥ ९० ॥

यह जो श्री राम नाम है यह निर्वर्ण है अर्थात् वर्णात्मक न होकर स्फोटोत्पन्न है और स्वर तथा व्यञ्जन दोनों वर्ण समूहों का अके मात्र स्वामी है । श्रीराम नाम में जो व्यञ्जन हल मकार अनुस्वार रूप होकर सम्पूर्णा अक्षरों के शिरो भाग में मुकुट के समान विराजता है और रेक (धर्म आदि शब्द में) छत्र के तुल्य प्रतिष्ठित है ।

रामनाममया सर्वे नामवर्णा प्रकीर्तिता ।

अतथेव रमुकीडा नाम्नामीशः प्रवर्तते ॥ ९० ॥



जितने भी नाम हैं उनके जो वर्ण हैं वे सभी रामनाममय हैं अर्थात् राम शब्द जन्य हैं इसलिये रमू कीऽा  
धातु को निष्पन्न करने वाला श्रीराम नाम सभी भगवन्नामों का स्वामी है ।

कोटि तीर्थानि दानानि कोटि योग प्रतानि च ।

कोटि यज्ञ जपाश्चैव तपसः कोटि कोटयः ॥ १०३ ॥

कोटि ज्ञानैश्च विज्ञानं कोटि ध्यान समाधिभिः ।

सत्यं वदामि तैस्तुल्यं रामनाम प्रवर्त्तते ॥ १०४ ॥

तीर्थ, दान, योग, प्रत, यज्ञ, जप, तप और कोटिज्ञान विज्ञान तथा कोटि-कोटि ध्यान समाधि के तुल्य श्रीराम नाम  
है अर्थात् श्रीराम नाम के जप से इन सबका फल मिल जाता है पार्वती! मैं सत्य सत्य कहता हूँ ।

परावाण्या भजेन्नित्यं राम नाम परात्परम् ।

त्यक्तवामोऽहं य मात्सर्यं वाक्यं यैवान्तन्तथा ॥ १०५ ॥

मोह मत्सर असत भाषण को त्याग कर वाणी से परात्पर श्रीराम नाम को भजना चाँडिअे ।

दृन्मलं क्रोधकामादि लोभमज्ञानमेव च ।

रागद्वेषं च दुस्सङ्गं त्यक्त्वा दुर्वासनामपि ॥ १०६ ॥

सर्वेन्द्रिय जितो भूत्वा पूतो बाह्यान्तरस्तथा ।

एत्थं नाम जपेन्नित्यं रामरूपो भवेन्नरः ॥ १०७ ॥

दृष्ट्य के मल काम क्रोध लोभ और अज्ञान राग द्वेष और दुस्सङ्ग तथा दुर्वासना को भी त्याग कर सभी इन्द्रियों  
को जित कर भीतर बाहर से शुद्ध होकर इस प्रकार जो नित्य राम नाम को जपते हैं वे श्रीराम रूप हो जाते हैं  
अर्थात् साऽुष्य मोक्ष को प्राप्त करते हैं ।

रहः पठतियो नित्यमेतत्कमललोचने ।

सर्वं ध्यानं कृलं तस्य कलां नार्हतिषोऽशीम् ॥ १०८ ॥

भगवान शिव बोले कि हूे कमललोचने! जो पुरुष नित्य ही अेकान्त चित्त होकर इसका पाठ करेऽुगे उस पुरुष के  
सम्पूर्णा ध्यानादि साधन का फल इसकी सोलहवीं कला के बराबर भी नहीं हो सकता है ।

शठाय पर शिष्याय विषयाढ्याय मानिने ।

नदातव्यं नदातव्यं श्रीरामोपासकं विना ॥ १०९ ॥

भगवान शिव बोले कि श्रीरामोपासकों को छोऽुकर पर शिष्य अथवा शठ विषयी अभिमानियों को नहीं देना  
चाँडिअे नहीं देना चाँडिअे ।

यदि दातव्यमन्येषां सद्योमृत्युः प्रजायते ।

मडतामेव य सर्वेषां ज्वनं प्रोच्यतेऽप्यतः ॥ ११० ॥

भगवान शिव कहते हैं कि यह रहस्य सभी मडानुभावों का ज्वन धन है इसलिये अनधिकारी को इसे देने से  
सीधे मृत्यु हो जाती है और अधिकारी को देने से अमृत के सदृश लाभ मिलता है ।

- ष्टि श्रीमन्मडारामायणे उमाडेश्वर संवाडे श्रीरामनाम्नोमडत्व कथन नाम द्विपञ्चाशत् सर्गः ॥ पर ॥

॥ श्रीसीतारामाभ्यामर्पणमस्तु ॥


ःसमे राम डे यरणयिह, रामभक्त की प्राप्ति डे उपाय, रामभक्तों डे लक्षण, धनृषभाण धारण की विधि, परात्परतम ब्रह्मराम, ऐकमात्र सधीभाव से उपासना की सभावता, सीता की आह्लादिनी ष्ट्यादि तेतीस शक्तियाँ तथा उनमें से प्रत्येक की ऐक-ऐक सडस्र उपशक्तियाँ बणित हैं। ष्टमे भी राम की रासलीला का वर्णन है। ङिन्दुत्व मे मडारामायण की नित्रानवे रासलीलाओं की यर्था है।

In this text of five chapters, the footprints of Rama, measures to attain Rama devotion, characteristics of Rama devotees, the method of holding a bow, the Supreme Lord Brahma, the gathering of worship with the only friend, the joy of Sita, etc. It also describes Rama's Raslila. In the book Hindutva by Ramdas Gaur, there is a discussion of nineteen rasalilas of Maharamayana (archive.org/details/in.gov.ignca.19051/page/n149/mode/1up.)


Only five chapters given here are available till today, according to a book Ram Bhakti Shakha page no. 468 archive.org/details/in.ernet.dli.2015.480197/page/n485/mode/1up this complete scripture has around 350,000 shlokas. And it's manuscripts is available at 'Kashmir Rajkiye Pustakalaya' and at Royal House of Kullu.

Encoded and proofread by Mrityunjay Rajkumar Pandey

---

——  
*Five Chapters from Maharamayana*

pdf was typeset on June 9, 2024

——

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

